डाक पंजीयन नं. 99/2021-23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG-5

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

PG-5

सिनेमाः ऋषि कपूर के हिट गाने 'ओम शांति ओम' पर थिरके रणबीर कपूर....

वर्ष -08 अंक -28 | प्रयागराज, शुक्रवार 01 अप्रैल, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

मालेगांव विस्फोट मामले में अपने बयान से मुकरा एक और गवाह, 31 मार्च को अगली सुनवाई

नई दिल्ली। 2008 मालेगांव ब्लास्ट मामले में बुधवार को एक और गवाह ने आरोपी प्रसाद पुरोहित की पहचान करने से इंकार कर दिया। अपने पहले दिए गए बयान से पलटते हुए गवाह ने कोर्ट में आरोपी की पहचान नहीं की। अब अगली सुनवाई 31 मार्च को होगी। बता दें कि अब तक 19 से अधिक गवाहों ने आरोपियों की पहचान करने से इंकार कर दिया है। इससे पहले सुनवाई के दौरान मामले में 19वें गवाह ने आरोपियों की पहचान से इंकार कर दिया था। मामले की सुनवाई राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआई) के जज पीआर कर रहे हैं, जिनके समक्ष मुकरने वाले गवाह के बयान दर्ज किए गए हैं। मुकरने वाले गवाह ने कहा था कि वह केवल लेफ्टिनेंट कर्नल प्रसाद पुरोहित को पहचानता है। उस वक्त कोर्ट में मौजूद आरोपियों में पुरोहित भी थे गवाह ने कहा कि वह अन्य किसी आरोपी को नहीं जानता और न ही उनसे कभी मिला है। 29 सितंबर 2008 की रात मालेगांव में शकील गुड्स ट्रांसपोर्ट कंपनी के सामने एक मोटरसाइकिल में विस्फोट हुआ था। इसमें छह लोगों की मौत हो गई थी और 101 लोग जख्मी थे। पुलिस के अनुसार, जिस मोटर साइकिल में विस्फोट हुआ था वह प्रज्ञा ठाकुर के नाम पर रजिस्टर्ड थी और इसी आधार पर उन्हें 2008 में गिरफ्तार किया गया था। बांबे हाई कोर्ट ने साल 2017 में प्रज्ञा ठाकुर को जमानत दे दी थी। विस्फोट के दूसरे दिन मालेगांव के आजाद नगर पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज कराया गया था। आतंकवाद से जुड़ा होने के कारण तत्कालीन महाराष्ट्र सरकार के आदेश के बाद महाराष्ट्र एटीएस को मामले की जांच सौंप दी गई थी।

राज्यसभा से रिटायर हुए एंटनी सिब्बल, आनंद शर्मा समेत 72 सांसद पीएम मोदी बोले- कमी खलेगी

नई दिल्ली। राज्यसभा से रिटायर हो रहे 72 सदस्यों को आज विदाई दी गई। इस मौके पर सेवानिवृत्त सदस्यों ने आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राज्यसभा के सभापति एम वेंकैया नायडू, उप सभापति हरिवंश और लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के साथ एक फोटो भी खिंचवाई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राज्यसभा के 72 सेवानिवृत्त सदस्यों की विदाई पर राज्यसभा में बयान दिया। उन्होंने कहा कि हमारे राज्यसभा सदस्यों के पास बहुत अनुभव है। कभी-कभी अनुभव में ज्ञान से अधिक शक्ति होती है। हम सेवानिवृत्त सदस्यों से कहेंगे फिर से लौटकर सदन में आएं। राज्यसभा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि ये आजादी का अमृत महोत्सव है। हमारे महापुरुषों ने देश के लिए बहुत कुछ दिया, अब देने की जिम्मेदारी हमारी है। अब आप खुले मन से एक बड़े मंच पर जाकर आजादी के अमृत महोत्सव के पर्व को माध्यम बनाकर प्रेरित

करने में योगदान कर सकते हैं। पीएम मोदी ने आगे कहा कि हमने इस संसद में लंबा समय बिताया है। इस सदन ने हमारे जीवन में बहुत योगदान दिया है। इस सदन के सदस्य के रूप में प्राप्त अनुभव को देश के चारों दिशाओं में ले जाना चाहिए। दरअसल, उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू आज राज्यसभा के रिटायर हो रहे 72 सांसदों को अपने आवास पर भोज भी देंगे। उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति वेंकैया नायडू ने आज राज्यसभा से रिटायर हो रहे 72 सदस्यों को रात्रि भोज पर बुलाया है। इस अवसर पर राज्यसभा सदस्य अपनी प्रतिभा का परिचय भी देंगे। इस मौके पर तृणमूल के सांसद शांतनु सेन गिटार बजाएंगे। जबकि पार्टी की दूसरी सांसद डोला सेन रविंद्र संगीत गाएंगी। वहीं, भाजपा की सांसद रूपा गांगुली और एनसीपी की सांसद वंदना चव्हाण हिंदी गानें गाएंगी। इस दौरान उपराष्ट्रपति सभी सांसदों को स्मृति चिह्न भी भेंट करेंगे। बता दें कि राज्यसभा से 72 सांसद रिटायर हो रहे हैं। रिटायर होने वाले सदस्यों में कपिल सिब्बल, निर्मला सीतारमण, सुब्रमण्यम स्वामी, संजय राउत, पी चिदंबरम, पीयूष गोयल समेत कई नेता शामिल हैं।

सीए, सीएस और आइसीडब्लूएआइ संबंधी विधेयक लोस में मंजूर

नई दिल्ली। लोकसभा ने बुधवार को चार्टर्ड अकाउंटेंट, कास्ट अकाउंटेंट और कंपनी सचिवों के संस्थानों के कामकाज में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण विधेयक को मंजूरी दे दी। केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि परिवर्तन इन निकायों की स्वायत्तता को प्रभावित नहीं करेंगे। चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, कास्ट एंड व?र्क्स अकाउंटेंट्स और कंपनी सेक्रेटरी (संशोधन) विधेयक संबंधित संस्थानों की अनुशासनात्मक समितियों के पीठासीन अधिकारी के रूप में गैर-चार्टर्ड एकाउंटेंट (सीए), गैर-लागत लेखाकार और गैर-कंपनी सचिव की नियुक्त को सुगम करेगा है ये तीन संस्थान, इंस्टीट्यूट आफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स आफ इंडिया (आइसीएआइ), इंस्टीट्यूट आफ कास्ट अकाउंटेंट्स आफ इंडिया (पहले आइसीडब्लूएआइ के नाम से जाना जाता था) और इंस्टीट्यूट आफ कंपनी सेक्रेटरीज आफ इंडिया (आइसीएसआइ) है। वित्त और कारपोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने विधेयक पेश करते हुए कहा कि इस संशोधन से तीनों संस्थानों की स्वायत्तता

का उल्लंघन नहीं होगा। इसके बजाय, यह ऑडिट की गुणवत्ता को बढ़ाएगा और देश के निवेश के माहौल में सुधार करेगा। उन्होंने कहा कि संशोधन, संस्थानों को अधिक जिम्मेदार और जवाबदेह बनाएंगे और उन्हें वैश्विक सवीत्तम प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। उन्होंने जोर देकर कहा कि सभी हितधारकों को आडिट स्टेटमेंट पर अधिक विश्वास होना चाहिए। बिल, जो चार्टर्ड अकाउंटेंट्स एक्ट, 1949, कास्ट एंड व?र्क्स अकाउंटेंट्स एक्ट, 1959 और कंपनी सेक्रेटरीज एक्ट, 1980 में संशोधन करता है, विपक्षी सदस्यों द्वारा पेश किए गए संशोधनों को खारिज करने के बाद निचले सदन द्वारा पारित किया गया। बिल, जो चार्टर्ड अकाउंटेंट्स एक्ट, 1949, कास्ट एंड व?र्क्स अकाउंटेंट्स एक्ट, 1959 और कंपनी सेक्रेटरीज एक्ट, 1980 में संशोधन करता है, विपक्षी सदस्यों द्वारा पेश किए गए संशोधनों को खारिज करने के बाद निचले सदन द्वारा पारित किया गया। अन्य बातों के अलावा, बिल कारपोरेट मामलों के मंत्रालय के सचिव की अध्यक्षता में एक समन्वय समिति के गठन का प्रविधान करता है। इसमें तीनों संस्थानों के प्रतिनिधि होंगे। मंत्री ने कहा कि इससे पहले तीनों संस्थानों ने एक समन्वय समिति गठित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन प्रस्ताव पर अमल नहीं हो सका। वित्त मंत्री ने कहा कि समिति संस्थानों के संसाधनों के प्रबंधन में मदद करेगी। आइआइएम और आइआइटी में भी समन्वय समितियां हैं। उन्होंने कहा कि विधेयक संस्थानों में फमरें के पंजीकरण का भी प्रविधान करता है। इससे भारतीय लेखा फमी के बड़े होने का मार्ग प्रशस्त करने में मदद मिलेगी। इसमें कदाचार के दोषी पाए गए भागीदारों और फमरें के लिए जुर्माने की राशि बढ़ाने का भी प्रस्ताव है।

आम्रपाली के प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए सात बैंक देंगे 1,500 करोड़

नई दिल्ली। अपनी गाढ़ी कमाई लगाकर घर के सपने को पूरा करने के लिए आम्रपाली समूह के विभिन्न प्रोजेक्ट में फ्लैट बुक कराने वाले हजारों लोगों के लिए बड़ी राहत की खबर है। सात बैंकों का एक समूह आम्रपाली समूह के अटके पड़े प्रोजेक्ट के निर्माण को पूरा करने के लिए 1,500 करोड़ रुपये का कर्ज देगा। सार्वजनिक क्षेत्र की राष्ट्रीय भवन निर्माण कंपनी यानी एनबीसीसी ने 'आम्रपाली स्टाल्ड प्रोजेक्ट्स एंड इनवेस्टमेंट रिकंस्ट्रक्शन एस्टैब्लिशमेंट' (एएसपीआइआरई) के अंतर्गत और सुप्रीम कोर्ट की देखरेख में नोएडा और ग्रेटर नोएडा में आम्रपाली की रुकी हुई कई रिहायशी परियोजनाओं को पूरा करने का जिम्मा लिया है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर पूर्ववर्ती आम्रपाली समूह के प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए बैंक एनबीसीसी को कर्ज देने के लिए तैयार हुए हैं। सुप्रीम कोर्ट ने 28 मार्च को बैंकों के समूह को निर्देश दिया था कि वह मंगलवार तक उक्त रकम का भुगतान कर दे। एनबीसीसी ने एक बयान में कहा कि 29 मार्च को एएसपीआइआरई और बैंकों के समूह के बीच आम्रपाली प्रोजेक्ट के लिए 1,500 करोड़ रुपये के कर्ज वितरण को लेकर एक करार हुआ है।

स्कूली शिक्षा में एकरूपता लाने के लिए सरकार का अहम कदम, पहली कक्षा में दाखिले की न्यूनतम उम्र होगी छह साल

नई दिल्ली। स्कूली शिक्षा में एकरूपता लाने को लेकर सरकार ने एक और अहम कदम उठाया है। इसके तहत देशभर के स्कूलों में पहली कक्षा में दाखिले की

न्यूनतम उम्र छह साल होगी। केंद्रीय स्तर पर स्कूली शिक्षा के सबसे बड़े संगठन केंद्रीय विद्यालयों में इसे लागू करने के बाद शिक्षा मंत्रालय अब इसे राज्यों में भी लागू कराने की तैयारी में है। सभी राज्यों को इसे लेकर जरूरी दिशा-निर्देश दे दिए गए हैं। साथ ही कहा है कि वे इसे अगले दो से तीन साल में अमल में ला सकते हैं। शिक्षा मंत्रालय ने यह कदम नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सिफारिश के बाद उठाया है, जिसमें स्कूली ढांचे को पूरी तरह से बदल दिया गया है। इसमें पहली कक्षा में दाखिले की उम्र की छह साल तय की गई है। हालांकि अभी भी बिहार, उत्तर प्रदेश सहित करीब 22 ऐसे राज्य और केंद्र शासित प्रदेश हैं, जहां पहली कक्षा में दाखिले की न्यूनतम उम्र छह साल ही रखी गई है। वहीं गुजरात, दिल्ली और केरल जैसे करीब 14 ऐसे राज्य और केंद्र शासित प्रदेश भी है, जहां मौजूदा समय में पहली कक्षा में दाखिले की न्यूनतम उम्र पांच साल या साढ़े पांच साल है। मंत्रालय का मानना है कि स्कूली शिक्षा की यह बड़ी विसंगति है जिसका खामियाजा छात्रों को एक राज्य से दूसरे राज्य में शिफ्ट होने या प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होने के दौरान उठाना पड़ता है। वहीं, सभी राज्यों में पहली कक्षा में दाखिले की अलग-अलग उम्र होने से आयुवर्ग के आधार पर नामांकन के जुटाए जाने वाले ब्योरे में भी गलती बनी रहती है।

कब से शुरू हो रहा रमजान का पवित्र महीना, सहरी और इफ्तार के वक्त से लेकर यहां जाने पूरी जानकारा

नई दिल्ली। मुस्लिमों के लिए रमजान का पाक महीना काफी मायने रखता है। रमजान इस्लामी कैलेंडर का नौवां महीना है। 30 दिन मुस्लिम समुदाय के लोग रोजा रखते हैं और पांच

वक्त की नमाज पढ़कर अल्लाह की इबादत करते हैं। ऐसे में अब रमजान के पवित्र महीने का आगाज होने में कुछ ही दिन बचे हैं। जानकारी के अनुसार, इस बार देश में अप्रैल से रमजान का आगाज हो जाएगा। रमजान का पहला रोज पूरी तरह से चांद के दिखने पर निर्भर रहेगा। इस मौके पर आपकों रमजान से जुड़ी कुछ खास बातें जरुर जाननी चाहिए। इस बार रमजान के पवित्र महीने में सहरी और इफ्तारी का क्या वक्त रहेगा। इस्लामिक कैलेंडर के अनुसार, इस बार 2 या 3 अप्रैल को पहला रोजा हो सकता है। अगर 1 अप्रैल को चांद दिखाई देगा तो पहला रोजा 2 अप्रैल को होगा। लेकिन 2 अप्रैल को चांद दिखा तो 3 अप्रैल को देश में पहला रोजा होगा। इसके बाद 30 दिन तक मुस्लिम समुदाय के लोग रोजा रखकर अल्लाह की इबादत करेंगे। वैसे तो देश भर में अलग-अलग समयानुसार सहरी और इफ्तार का वक्त होता है। अगर देश की राजधानी दिल्ली की बात करें तो यहां सहरी का वक्त 4:51 बजे है। वहीं, इफ्तार का वक्त 6:40 बजे है। इसके अलावा देश के दूसरे शहरों में सहरी और इफ्तार का वक्त इस तरह है। रमजान के पवित्र महीने में 30 दिन तक मुस्लिम समाज के लोग इबादत करते हैं। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक मुस्लिम समुदाय के लोग कुछ खा-पी नहीं सकते हैं। इस दौरान वह पांच वक्त की नमाज पढ़ते हैं और सूर्यास्त के बाद ही वह रोजा खोलते हैं। साथ ही रमजान में मस्जिदों और घरों में में कुरान की तिलावत भी की जाती है। सभी लोगों के लिए रमजान में रोजा रखना जरुर माना जाता है। हालांकि, सिर्फ नवजात बच्चों, महिलाओं, गर्भवती औरतों को रोजा न रखने की छूट होती है। रमजान के पाक महीने में मुस्लिम समाज पूरी तरह से इबादत करता है। रमजान के दौरान मुसलमान किसी भी गलत कार्य करने से बचता है। इस दौरान किसी को अपशब्द बोलने, लड़ाई और झूठ बोलने की मनाही होती है। साथ ही स्मोकिंग और शराब का सेवन भी वर्जित माना जाता है। रमजान के 30 रोजे पूरे होने के बाद ही ईद-उल-फितर का त्योहार मनाया जाता है। इस बार ईद का पर्व 2 या 3 मई को मनाया जाएगा। ईद के दिन मुस्लिम समुदाय के लोग गरीबी में जकात देते हैं। साथ ही इस दिन घरों में अच्छे-अच्छे पकवान भी बनते हैं। इस्लाम धर्म को मानने वाले लोगों के लिए यह बहुत ही खुशी का त्योहार होता है।

गेहूं की सरकारी खरीद शुक्रवार से होगी, सरकार ने की पूरी तैयारी; किसानों को मिलेंगे बढिया दाम

नई दिल्ली। चालू रबी मार्केटिंग सीजन गेहूं की औपचारिक सरकारी खरीद शुक्रवार से शुरू हो रही है। इसके लिए खाद्य मंत्रालय के साथ संबंधित सभी गेहूं उत्पादक राज्यों में तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। अनाज मंडियों में इस बार गेहूं की खरीद के लिए सरकार को कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है, क्योंकि देश की ज्यादातर मंडियों में दाम केंद्र सरकार के घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के मुकाबले अधिक बोला जा रहा है। वैसे, यह स्थिति किसानों के साथ सरकार के लिए भी लाभप्रद साबित हो सकती है। किसानों को जहां उनकी उपज का लाभकारी मूल्य प्राप्त होगा, वहीं सरकार को खाद्य

सब्सिडी घटाने मदद मिल सकती है। चालू रबी सीजन में फसलों की बंपर पैदावार की उम्मीद लगाई गई है गेहूं की पैदावार 11.13 करोड़ टन होने वाली है, जिसमें से 4.44 करोड़ टन सरकारी खरीद का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह कुल पैदावार का करीब 40 प्रतिशत है। पिछले साल रबी मार्केटिंग सीजन में कुल 4.33 करोड़ टन गेहूं की सरकारी खरीद की गई थी। सरकार जन कल्याणकारी योजनाओं के साथ किसानों के हितों को देखते हुए जरूरत से ज्यादा गेहूं व चावल की खरीद करती है। इसके चलते खाद्य सब्सिडी हर वर्ष लगातार बढ़ रही है। खुले बाजार से निजी प्रतिष्ठानों के दूर रहने से भी सरकार पर गेहूं व चावल की खरीद का दबाव पड़ता है। अभी गेहूं के लिए एमएसपी 2,015 रुपये प्रति क्विंटल है।

अंतरिक्ष तक रूस यूक्रेन युद्ध के बीच जंग की आंच, आइएसएस पर क्यों मंडरा रहा खतरा

नई दिल्ली। यूक्रेन से जारी युद्ध के बीच रूस ने जिस तरह से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) के खात्मे की बात कही है, वह एक साथ कई मोर्चे खुलने का संकेत देती है। संचालन ठप होने की स्थिति में आइएसएस भारत, चीन समेत अमेरिका आदि किसी भी देश में गिर सकता है। उल्लेखनीय है कि आइएसएस अंतरिक्ष को समझने और वहां से पृथ्वी की विभिन्न गतिविधियों की निगरानी और शोध का ऐसा जरिया उपलब्ध कराता है, जिसकी तुलना नहीं की जा सकती। यह मिशन मानव सभ्यता के विकास के अलावा जाति, समाज और देश के दायरे से बाहर आकर इंसानी साङोदारी का एक बेमिसाल प्रतीक है। यह मिसाल है कि कैसे इंसान दुनियावी झंझटों से ऊपर उठकर एक बेहतर विश्व बनाने के संकल्प के लिए एकजुट हो सकता है। ऐसे में आइएसएस का संचालन रुकने या किसी कारण उसका धरती पर वापस गिरने की आशंकाएं इस संकल्प को खतरे में डालती हैं। आइएसएस का दांव : रात के आकाश में चंद्रमा और शुक्र ग्रह के बाद पृथ्वी से दिखने वाली सबसे ज्यादा चमकदार चीजों में शामिल आइएसएस करीब 27,600 हजार किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से 400 किलोमीटर की ऊंचाई पर धरती की परिक्रमा कर रहा है। उस पर मौजूद अंतरिक्ष यात्री 24 घंटे में 16 बार सूर्योदय और सूर्यास्त देखने के अलावा कई वैज्ञानिक प्रयोगों-अन्वेषणों को अंजाम देते हैं। मोटे तौर पर वह एक मानवनिर्मित सैटेलाइट है, जिसे पृथ्वी की निचली कक्षा में इस तरह स्थापित किया गया है जिससे कि पृथ्वी से भेजे जाने वाले अंतरिक्ष यान जुड़ सकें। चूंकि उस पर अंतरिक्ष यात्री-विज्ञानी लंबी अवधि के लिए रह सकते हैं, इसलिए वहां समय-समय पर अंतरिक्ष यान भेजकर रसद पहुंचाई जाती है।

रक्षा मंत्रालय ने बीईएल के साथ किए 3,102 करोड़ रुपये के करार, वायुसेना के लिए अत्याधुनिक प्रणालियों की होगी आपूर्ति

बेंगलुरु। रक्षा मंत्रालय ने भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड (बीईएल) की बेंगलुरु और हैदराबाद इकाइयों के साथ 3,102 करोड़ रुपये के दो अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए हैं। रक्षा मंत्रालय और बीईएल-बेंगलुरु ने वायुसेना के युद्धक विमानों के लिए एडवांस्ड इलेक्ट्रानिक वारफेयर (ईडब्लूयू) सूट की आपूर्ति के लिए अनुबंध किया है। बीईएल के बेंगलुरु स्थित मुख्यालय ने बुधवार को एक बयान जारी कर बताया कि इस अनुबंध की कुल लागत लगभग 1,993 करोड़ रुपये हैं। बयान के मुताबिक, 'अत्याधुनिक ईडब्लूयू प्रणालियों की आपूर्ति से दुश्मनों के जमीन पर स्थापित और विमानों में तैनात अग्नि नियंत्रण एवं निगरानी रडारों के खिलाफ

अभियानों के दौरान वायुसेना के लड़ाकू विमानों की युद्धक क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।' इन ईडब्लूयू सूट को स्वदेश में डिजायन किया गया है और इनका विकास रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने किया है। रक्षा मंत्रालय ने एक अनुबंध बीईएल-हैदराबाद के साथ किया है। इसके तहत वायुसेना को इंस्ट्रूमेंटेड इलेक्ट्रानिक वारफेयर रेंज (आइईडब्लूआर) की आपूर्ति की जाएगी। बयान के मुताबिक, यह अनुबंध भविष्य के युद्धों की तैयारी में वायुसेना की क्षमताओं को बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इस अनुबंध की कुल लागत करीब 1,109 करोड़ रुपये है। आइईडब्लूयूआर का इस्तेमाल विमानों में लगे ईडब्लूयू उपकरणों का परीक्षण एवं मूल्यांकन करने और अभियान के परिदृश्य में उनकी तैनाती को सत्यापित करने के लिए किया जाएगा।

पीडीए ने की बैठक 1 अप्रैल से गरजेगा बुलडोज़र

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। शहर के आसपास के इलाकों में अवैध प्लॉटिंग पर पहली अप्रैल से लगातार कार्रवाई होगी। इस बार शहर पश्चिमी के साथ झूंसी, नैनी और फाफामऊ क्षेत्र में अवैध प्लॉटिंग पर बुलडोजर चलेगा।अवैध प्लॉटिंग और निर्माणों पर कार्रवाई के लिए प्रयागराज विकास प्राधिकरण के अधिकारियों ने की एक बैठक। जिसमें अधिकारियों ने इस बार शहर के आसपास हर हिस्से में कार्रवाई की योजना बनाई है। इसके अलावा पीडीए अपनी जमीन से भी अवैध कब्जे हटाएगा। अवैध प्लाटिंग और निर्माणों के खिलाफ पीडीए ने पिछले सोमवार से अभियान शुरू कर दिया। अधिकारियों ने बताया कि पुलिस प्रशासन ने ध्वस्तीकरण की तारीख के तीन दिन पहले सूचना देने के लिए कहा था। इसलिए एक अप्रैल से लगातार कार्रवाई की योजना बनाई गई। इसकी सूचना पुलिस को दी गई है।

ग्रामीण बैंक में सरवर की खराबी से के वाई सी नहीं हो रही अपडेट

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। फूलपुर के मैलहन बाजार में स्थित बड़ौदा उत्तर प्रदेश ग्रामीण

बैंक में इन दिनों सरवर की खराबी से सारा काम ठप्प पड़ा है। सरकारी योजनाओं के लाभाथिर्यों को के वाई सी मोबाइल नंबर सहित अपडेट कराने हेतु मार्च तक की ही सरकारी तिथि दी गई थी। परंतु सरवर पर लोड अधिक होने के कारण बैंकिंग कार्य ठप पड़ा है। किसान पेंशन, वृद्धा पेंशन, विधवा, दिव्यांग पेंशन वाले भटक रहे हैं। यही हालत रही तो अप्रैल माह में आने वाली किस्तों को ग्रहण लग सकता है। इस बीच गांव में फर्जी जन सुविधा केंद्र चलाने वालों की चांदी कट रही है। बता दें कि किसान पेंशन तथा वृद्धावस्था पेंशन कि कई किस्ते ग्रामीणों के खाते में नहीं आ पाई है। जिसके कारण उन्हें दर-दर भटकना पड़ रहा है।

मानापुर उर्फ बगईकला गांव को मिला मुख्यमंत्री पुरस्कार योजना एवार्ड

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। प्रयागराज जनपद के मनापुर उर्फ बगईकला गांव को अच्छे कार्य करने के लिए मुख्यमंत्री पुरस्कार योजना में सात लाख रुपए की अतिरिक्त धनराशि देकर

मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने अपने हाथों ग्राम प्रधान प्रताप बहादुर सिंह को चेक देकर गांवों विकास की धारा बहाने की अपेक्षा की है। प्रयागराज जनपद के मनापुर उर्फ बगईकला गांव जो पहले फूलपुर विकास खंड में रहा वर्तमान समय में नवचयनित ब्लाक सहसो में है वहा के ग्राम प्रधान प्रताप बहादुर सिंह द्वारा गांव के विकास के लिए बेहतर काम करने पर विभागीय अधिकारियों और कर्म चारियो ने उनकी जहा प्रशंसा की वही उनके गांव के विकास के लिए उच्च अधिकारियों के माध्यम से मुख्यमंत्री पुरस्कार योजना के लिए वर्ष 2021़22 के लिए फाइल भेजी गई जहा अवलोकन के बाद मंगलवार को प्रयागराज जनपद के उक्त गांव का चयन के बाद मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ ने ग्राम प्रधान प्रताप बहादुर सिंह को अपने कार्यालय बुलाकर उन्हें मुख्यमंत्री पुरस्कार योजना की सात लाख रुपए धनिराषि का चेक सौप कर उन्हे बेहतर काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उन्हें बधाई दी उक्त गांव का चयन होने के बाद ग्रामीणों में खुशी व्याप्त है। उक्त पुरस्कार का चयन फूलपुर ब्लाक के माध्यम से हुआ है।

शॉर्ट सर्किट से लगी आग ५ बकरियां मरी

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। कोतवाली अंतर्गत सौरहा गांव में बुधवार दोपहर शॉर्ट सर्किट से लगी आग से 5 बकरियां जिंदा जल गई। मिली जानकारी के अनुसार उक्त गांव निवासी मोहम्मद अमीन पुत्र स्वर्गीय मियादीन कि 5 बकरियां घर के एक छप्पर में बधी थी। घर पर शॉर्ट सर्किट से गिरी चिंगारी से छप्पर जलकर राख हुआ। जिसमें बधी 5 बकरियां भी बुरी तरह जल कर मर गई। आग की भयावहता से कोई बुझाने की हिम्मत नहीं कर सका। सूचना राजस्व विभाग के साथ-साथ पशुधन चिकित्सा अधिकारी को दी गई। उन्होंने मौके पर पहुंचकर सभी मृतक बकरियों का पोस्टमार्टम किया। घरवालों पर दुधारू कीमती बकरियों की मौत से दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

चंदौकी गांव में शौचालय व किचेन शेड के निर्माण में अनियमितता की शिकायत

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। फूलपुर विकास खण्ड के सराय अभय चन्द उर्फ चंदौकी गांव में अधूरे पड़े दिव्यांग शौचालय व किचेन शेड का निर्माण कार्य अधूरा होने पर गांव के ही राजकुमार ने उच्चाधिकारियों को शिकायती पत्र प्रेषित कर कार्रवाई की मांग की। शिक़ायतकर्ता राजकुमार ने मंगलवार को डीपीआरओ को शिक़ायती पत्र देते हुए चंदौकी गांव में बने दिव्यांग शौचालय व किचेन शेड में अनियमितता का आरोप लगाया। शिकायतकर्ता का आरोप है कि एक वर्ष पहले शुरू हुए दिव्यांग शौचालय व किचेन शेड का कार्य पूर्ण न होने के बावजूद भी धनराशि का आहरण कर लिया गया है। गौरतलब है कि ऑपरेशन कायाकल्प के तहत विकास खण्ड के समस्त प्राथमिक विद्यालय व उच्च प्राथमिक में दिव्यांग शौचालय का निर्माण अतिशीघ्र किया जाना प्रस्तावित था।

बीएसएनएल सेवाएं सप्ताह भर से ठप्प

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। एक तो तीत लौकी दूजे चढ़ी नीम वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। फूलपुर क्षेत्र में बीएसएनएल के समस्त एक्सचेंज मात्र बिजली से चलते है। बिजली आने पर चालू हो जाते हैं और जाते ही बंद हो जाता है। कारण यह है कि ना बैटरी है ना जनरेटर। तेल बेच दिए जाने की शिकायत हर जुबान पर है। सरकार की महत्वपूर्ण सेवा को जिम्मेदार चूना लगा रहे है। मैलहन एक्सचेंज की सेवाएं कई दिनों से ठप्प है। उपभोक्ता सिम लेकर परेशान है। इस मामले को जिला प्रबंधक दूरभाष के संज्ञान में अखबारों के मार्फत लाने का भी कोई असर नहीं दिखा। उपभोक्ता मजबूर है। प्राइवेट नेटवर्को में जाने हेतु।

फतेहपुर में सब इंस्पेक्टर की मौत से प्रयागराज में परिवार सदमे में

प्रयागराज। फतेहपुर जनपद के सुल्तानपुर घोष थाना गेट के सामने वाहन चेकिंग करते वक्त बाइक की टक्कर से 50 वर्षीय उपनिरीक्षक वीरेंद्र नाथ मिश्र की मौत से प्रयागराज में उनका परिवार सदमे में डूब गया। नैनी स्थित मकान से पतने और बेटे समेत कई लोग फतेहपुर के लिए रवाना हो गए। घर पर तमाम रिश्तेदार जुट गए। प्रयागराज जनपद में कौंधियारा के ओसा गांव के मूल निवासी उपनिरीक्षक वीरेंद्र नाथ मिश्रा ने नैनी में मेवालाल की बगिया के पास मकान बनाया है। उनकी पतने-बच्चे वहीं रहते है। वीरेंद्र नाथ की तैनाती मौजूदा समय में फतेहपुर में सुल्तानपुर घोष थाने में थी। रविवार सुबह साढ़े दस बजे वह सुल्तानपुर घोष थाने के सामने वाहनों की चेकिंग कर रहे थे।

दिव्यांग जन सशक्तिकरण विभाग बचपन डे केयर सेंटर को मिला आईएसओ प्रमाण पत्र

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। 29 मार्च 2022 : दिव्यांग जन सशक्तिकरण विभाग की ओर से संचालित बचपन डे केयर सेन्टर (प्री प्राथमिक) विद्यालय को आईएसओ 9001:2015 प्रमाण पत्र दिया गया। क्वालिटी मैनेजमेंट सिस्टम के अंतर्गत आई0सी0एल0 संस्था की ओर से यह प्रमाणपत्र विद्यालय में आईएसओ संबन्धित मानकों को पूरा करने के लिए दिया गया है। लखनऊ से आई जांचकर्ताओं की टीम ने विद्यालय का निरीक्षण कर् के मानक के आधार पर विद्यालय में शिक्षा, स्वस्थ्य एवं सुरक्षा संबंधी मानकों को परखा। यहां 3-7 वर्ष के श्रवण दिव्यांग, दृष्टि दिव्यांग व बौद्धिक दिव्यांग बच्चों को निःशुल्क दी जा रही शिक्षण प्रशिक्षण की व्यवस्था ने टीम को प्रभावित किया। विद्यालय में निःशुल्क आवागमन के लिए मानक अनुरूप वाहन की व्यवस्था व स्पीच थेरेपी, फिजियोथेरेपी के क्षेत्र में विशेष अध्यापकों द्वारा किए जा रहे

सकारात्मक प्रयास को जांचकर्ताओं ने सराहा। इसके साथ ही विद्यालय में बच्चों के लिए प्रयोग हो रहे संगीत प्रशिक्षण के लिए आधुनिक उपकरण की उपलब्धता पर टीम ने तारीफ की। दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग की प्रयागराज मण्डल उपनिदेशक विनीता यादव व जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी नन्दकिशोर यागिक ने आई0एस0ओ0 प्रमाण पत्र प्राप्त करने पर बचपन डे केयर सेंटर के कार्यो की सराहना की। विनीता यादव ने कहा कि विभाग के इस सेंटर ने हमेशा विशेष उपलब्धियां अपने नाम किया है। यहाँ नियुक्त सभी शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं समन्वयक व प्रबन्धक की जितनी तारीफ कि जाए उतना कम है। नन्दकिशोर यागिक ने कहा कि प्रमाण पत्र प्राप्त करने में विशेष उपलब्धि समन्वयक चन्द्रभान द्विवेदी की रही है। जिसने शिक्षा के साथ-साथ विद्यालय परिसर में रखा हर बच्चे के स्वास्थ्य व सुरक्षा का रखा ख्याल। इसके साथ ही इस विशेष उपलब्धि में विद्यालय के शिक्षक संदीप शुक्ला, दिलीप कुमार पाण्डेय, महेश मिश्रा व शिक्षिका सविता जायसवाल, संजू कुशवाहा, की भूमिका सराहनीय है। साथ ही इस उपलब्धि में चतुर्थ श्रेणी कर्मी के पद पर नियुक्त बृजेश कुमार भारती, जितेन्द्र, सोनी, ज्योति व शैलेन्द्र दूबे का भी योगदान विशेष है।

क्वालिटी मैनेजमेंट सिस्टम के अंतर्गत मानकों पर खरा उतरा विद्यालय प्री प्राथमिक इस विद्यालय ने विशेष उपलब्धियां अपने नाम की : उपनिदेशक हर बच्चे के स्वास्थ्य व सुरक्षा का रखा ख्याल : दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित
ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 15 अप्रैल 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710,
9807278552, 9415608790

माधव ज्ञान केंद्र में वार्षिक परीक्षा फल वितरण एवं प्रतिभा अलंकरण समारोह संपन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। माधव ज्ञान केंद्र इंटरमीडिएट कॉलेज नैनी प्रयागराज में वार्षिक परीक्षा फल वितरण एवं प्रतिभा अलंकरण समारोह आकर्षक एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुआ ,कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती जी के चित्र पर पुष्प व दीप प्रज्वलन से हुआ,तत्पश्चात विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ विंध्यवासिनी प्रसाद त्रिपाठी ने आए हुए अतिथियों का स्वागत अंगवस्त्रम ,स्मृति चिन्ह एवं माल्यार्पण से किया। विद्यालय के परीक्षा प्रमुख श्री विजय कुमार सिंह ने परीक्षा का वृत्त निवेदन प्रस्तुत किया ,उन्होंने बताया कि विद्यालय में सत्र 2021-2022 में 1010 छात्र पंजीकृत थे। कक्षा अरुण से अष्टम ,नवम व एकादश में कुल 674 भैया बहनों ने वार्षिक परीक्षा दी, जिसका परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अमित कुमार निदेशक के के सेल्स प्राइवेट लिमिटेड प्रयागराज ने अपने उदबोधन में विद्यालय के भैया बहनों को बेहतर से बेहतर करने की प्रेरणा दी तथा सभी सफल भैया बहनों को बहुत-बहुत बधाई देते हुए कहा कि आप सब निरंतर प्रगति के पथ पर इसी तरह अग्रसर होते रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमान मोहन टंडन जी प्रांत संयोजक ,विशिष्ट अतिथि श्री उदय नारायण त्रिपाठी प्रबंधक संयत्र आई ओ सी एल तथा श्री आशीष कुमार मिश्र मुख्य संयंत्र प्रबंधक आइ ओ सी एल झूसी, विद्यालय के प्रबंधक श्री शिव कुमार पाल जी, श्रीमती अलका जी ने विभिन्न विधाओं में बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। विद्यालय में अनुशासन, आदर्श,

सर्वोच्च अंक ,कक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान,सर्वोच्च उपस्थिति, कला प्रतियोगिता ,रंगोली प्रतियोगिता, दीप सज्जा ,साज-सज्जा ,वेश प्रतियोगिता ,खेलकूद व अन्य विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल भैया बहनों तथा विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री सुख सागर मिश्र, श्री जनार्दन प्रसाद त्रिपाठी की सेवा समाप्त होने पर उन्हें सम्मानित किया गया विद्यालय में आदर्श भैया का पुरस्कार अविनाश कुमार त्रिपाठी तथा आदर्श बहन का पुरस्कार सौम्या शुक्ला व शुभांगी को दिया गया। कक्षा अरुण उदय व प्रथम में सवीच्च अंक के लिए बहन अदिति मिश्रा 86.83 प्रतिशत ,कक्षा 2से 5 में बहन आराध्या सिंह 91.1 प्रतिशत, कक्षा 6 से 8 तक बहन पायल सिंह 93.4 प्रतिशत ,कक्षा 9 में खुशबू कुशवाहा 95.33 प्रतिशत, कक्षा 11 में आदर्श गुप्ता 86 5ज्ञ् अंक प्राप्त कर सर्वोच्च स्थान बनाया। उक्त अवसर पर विद्यालय के समस्त शिक्षक एवं शिक्षिकाएं उपस्थित रहे ।

प्राथमिक उपचार देकर एनडीआरएफ ने बचाई युवक की जान

(आधुनिक समाचार सेवा)
देवभूषण कन्नौजिया

वाराणसी । वाराणसी में बाबा काशी विश्वनाथ के दर्शन व गंगाजी में सनन करने रीवा मध्य प्रदेश से आए परिवार का एक युवक दशाश्वमेध घाट के नज़दीक देर रात गंगाजी में सनन के दौरान गहरे पानी में चला गया, जिसे नांव पर मौजूद मल्लाहों ने बाहर निकाला । लेकिन ज्यादा पानी शरीर में चले जाने के कारण युवक बेहोश हो गया और अचेत अवस्था में होने के कारण कोई प्रतिक्रिया नहीं कर पा रहा था । घटना की सूचना जैसे ही दशाश्वमेध घाट पर मौजूद एनडीआरएफ टीम को मिली, टीम ने त्वरित कार्यवाही करते हुए घटना स्थल पर युवक के शरीर से पानी निकालने के लिए विशेष बचाव तकनीकों का इस्तेमाल कर प्राथमिक उपचार दिया । जिसके परिणाम स्वरुप युवक होश में आया । उसके उपरांत एनडीआरएफ टीम द्वारा उसे पास के मारवाड़ी अस्पताल ले जाया गया । जहां डॉक्टर द्वारा उपचार दिए जाने के बाद उसे खतरे से बाहर घोषित कर दिया गया और उसके परिवार को सौप दिया गया । इस पूरे घटना क्रम में युवक, नाम गोविंद नारायण मिश्रा के परिवार जन बच्चे को खोने के डर से बहुत विक्षिप्त और विचलित थे । गोविंद के सही सलामत और स्वस्थ लौटने पर परिवारजनों ने एनडीआरएफ टीम के बचावकर्मियों का आभार और धन्यवाद व्यक्त किया ज्ञातव्य है कि कमान्डेंट श्री मनोज कुमार शर्मा के निर्देशन में 11 एनडीआरएफ वाराणसी की टीमें मानव सेवा में कृत संकल्प हैं और सदैव अग्रणी रहती हैं ।

वाराणसी में असलहा सटाकर पेट्रोल पंप के सेल्समैन से 70 हजार की लूट, सीसीटीवी में कैद हुई घटना

नकाबपोश बदमाशों ने पेट्रोल पंप के सेल्समैन से तमंचे के बल पर 70 हजार रुपया लूट कर हुए फरार

(आधुनिक समाचार सेवा)
देवभूषण कन्नौजिया

वाराणसी। मिर्जामुराद क्षेत्र के भीखीपुर गांव स्थित पेट्रोल पंप पर बुधवार की रात नकाबपोश बाइक सवार बदमाशों ने तमंचे के बल पर सेल्समैन से 70 हजार रुपये लूट कर फरार हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने बदमाशों को पकड़ने के लिए पुलिस काफी हाथ पांव मारा लेकिन वो गिरफ्त में नहीं आ सके। बदमाशों द्वारा अंजाम दिए गए घटनाक्रम पेट्रोल टंकी पर लगे सीसी कैमरा में कैद हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार मिर्जामुराद गांव निवासी सेल्समैन सुभाष चंद्र बोस रोज की तरह बुधवार की रात ट्रकों में तेल भर बिक्री का 70 हजार जेब में रखकर खड़ा था। इसी दौरान दो बाइक से पांच नकाबपोश बदमाश सेल्समैन के पास पहुंचे। उसे असलहा से आतंकित कर रुपये लूट लिए। उसके बाद हाइवे की तरफ भाग निकले। भुक्तभोगी इसकी सूचना पंप मैनेजर वरुण मिश्रा को दिया। मैनेजर के सूचना पर पहुंची मिर्जामुराद पुलिस बदमाशों को पकड़ने के लिए सक्रिय हुई। लेकिन बदमाश आंख से ओझल हो गये।

विकास और योजनाओं का सच जानने लेदौरा पहुंचे डीएम

अहरौला (आजमगढ़)। विकास और योजनाओं के क्रियान्वयन का सच जानने निकले जिलाधिकारी अमृत त्रिपाठी बुधवार की शाम अहरौला ब्लाक के लेदौरा गांव पहुंच गए। गांव के बाहर ही गाड़ी खड़ी कर गांव के

अंदर दाखिल हुए तो पहले लोग समझ ही नहीं पाए कि डीएम गांव में आए हैं। उन्होंने गांव में साफ-सफाई के साथ अधूरे आवास और शौचालय का निर्माण पूरा कराने का निर्देश दिया। एक महिला ने शिकायत की कि साहब आवास तो मिल गया, लेकिन वहां तक पहुंचने का रास्ता नहीं है। इस पर डीएम ने अधिकारियों से कहा कि अगर कागज में रास्ता है, उसका निर्माण होना चाहिए। अगर उस पर किसी का घर भी बना हो तो उसे हटा दिया जाए। जिलाधिकारी ने बीडीओ विनोद कुमार बिद और ग्राम पंचायत अधिकारी सौरव भारती को निर्देश दिया कि कहीं भी नाली खुली नहीं रहनी चाहिए। सभी नालियों को जोड़कर किसी पोखरे में मिलाया जाए। ग्राम विकास अधिकारी से कहा अपनी मर्जी से सही रूप से विकास करो और किसी भी अधिकारी द्वारा अगर शोषण किया जा रहा है तो उसकी शिकायत मुझसे आकर करो। पार्वती देवी ने शिकायत की कि आवास नहीं मिला है। इस पर ग्राम प्रधानपति चंद्रजीत निषाद ने कहा कि इनके पास पक्का मकान है। दो अधूरे आवासों को देख कहा कि जिन लोगों ने आवास का पैसा लेकर समय के अंदर आवास नहीं बनवाया उनके खिलाफ कार्रवाई की जाए। आवास निरस्त करके इनकी जगह पर प्रतीक्षा सूची में पहले से ही अंकित लाभार्थी को आवास दिया जाए। ऐसे लोगों को दिए गए धन की रिकवरी की जाए। नायब तहसीलदार धर्मेंद्र कुमार सिंह से कहा कि सभी छोटे-बड़े पोखरों को कब्जा मुक्त कराया जाए। निरीक्षण के दौरान बीडीओ विनोद कुमार बिद, एडीओ पंचायत अमरजीत सिंह, विभूति सिंह आदि उपस्थित रहे।

चार दिन बाद खुले बैंक व डाकघर, ग्राहकों की उमड़ी भीड़

चंदौली। दो दिन की साप्ताहिक बंदी और दो दिनों के हड़ताल के बाद खुले बैंकों में बुधवार को ग्राहकों की भीड़ उमड़ी। पूरे दिन बैंकों के बाहर लंबी कतारें लगी रहीं। अधिक भीड़ उमड़ने के कारण बैंक कर्मियों

को परेशानी का सामना करना पड़ा। विभिनन बैंकों के प्रबंधन ने सीमित संख्या में ही बैंक के भीतर प्रवेश करने की अनुमति दी। भीड़ को नियंत्रित करने में सुरक्षाकर्मियों के पसीने छूट गए। दरअसल अवकाश के चलते शनिवार और रविवार को बैंकों में बंदी रही। सोमवार से निजीकरण व नई पेंशन स्कीम के विरोध में बैंक, डाक कर्मियों ने दो दिवसीय हड़ताल शुरू कर दी। विरोध-प्रदर्शन कर कामकाज ठप कर दिया था। इसके चलते एसबीआइ को छोड़कर जिले के सभी सरकारी बैंक व डाकघर बंद रहे। पांचवें दिन बुधवार को बैंक खुलने पर ग्राहकों के भीड़ बैंकों में दिखाई पड़ी। ग्राहकों की सबसे अधिक भीड़ मुख्यालय स्थित यूनियन बैंक आफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, सेंट्रल बैंक आफ इंडियन, बैंक आफ इंडिया, इंडियन बैंक की शाखाओं में देखने को मिली। सुरक्षाकर्मी ग्राहकों को कतारबद्ध करते रहे, लेकिन भीड़ काउंटर पर जमा हो जा रही थी। अधिकांश लोग वेतन, पेंशन संबंधी मामलों को निबटाने के लिए बैंक पहुंचे थे। वित्तीय वर्ष की समाप्ति को लेकर बैंक कर्मियों पर लेन-देन को लेकर दबाव रहा। शाम तीन बजे तक बैंकों में भीड़-भाड़ बनी रही। इस दौरान लोगों रुपये की निकासी और जमा किया। इसके अलावा अन्य कार्यों के लिए लोगों को समस्याओं का सामना करना पड़ा। बैंकिग सेवा दो अप्रैल के बाद ही सुचारू होने की उम्मीद है। बैंक परिसर के बाहर दस बजे ही भीड़ उमड़नी शुरू हो गई थी। उधर, एटीएम पर भी निकासी को लेकर खासी भीड़ देखने को मिली। पीडीडीयू नगर, चकिया, सकलडीहा के बैंकों में भी शाखा खुलने से पहले ही ग्राहक पहुंच गए थे।

कैसा काम कर रही पुलिस जानने के लिए होगा ट्विटर व फेसबुक पोल

गोरखपुर। पुलिस की परफार्मेंस अभी तक अपराधों के आंकड़े तय करते रहे हैं, लेकिन अब उसके साथ-साथ जनमत से तय होगा कि पुलिस कैसा काम कर रही है। अभी गोरखपुर जोन के 11 जिलों में प्रयोग के तौर पर इसे पहली अप्रैल से शुरू किया जा रहा है। पहले चरण में यह ट्रायल जोन स्तर पर होगा। पहली अप्रैल से सात अप्रैल तक विभिन्न डिजिटल मंच पर लोग पुलिस के विषय में अपनी राय देंगे। उससे उस जिले की पुलिस की ग्रेडिंग तय की जाएगी। अपर पुलिस महानिदेशक अखिल कुमार ने इसे लेकर जोन की तीनों रेंज के आइजी, डीआइजी और 11 जिलों के एसपी, एसएसपी के साथ बैठक की। ग्रेडिंग के लिए एडीजी ने पांच तरीकों का चयन किया है। जिससे जनता की राय ली जाएगी, उसके बाद जिलों की ग्रेडिंग तय होगी। जोन स्तर पर प्रयोग सफल होने के बाद इसे रेंज, जिला, थाना व बीट स्तर पर लागू किया जाएगा। एडीजी ने यह प्रस्ताव डीजीपी कार्यालय को भी भेजा है, ताकि गोरखपुर में सफल होने के बाद इसे प्रदेश में भी ट्रायल के तौर पर लागू किया जा सके। इसके आधार पर थानेदारों को ग्रेडिंग का सर्टिफिकेट दिया जा सके।

कैंसर होने के दो साल पहले ही पता लगा लेगा एम्स, रोग होने से पहले ही शुरू होगा इलाज

गोरखपुर। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ने रोगों की पहचान, उनका भविष्य व उपचार की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। अब यहां कैंसर समेत अनेक गंभीर रोगों के शुरू होने के दो साल पहले ही उनके बारे में पता लगा लिया जाएगा। यह संभव हो सकेगा मालीक्यूलर बायोलाजी लैब से। इस लैब का उद्घाटन कार्यकारी निदेशक डा. सुरेखा किशोर ने बुधवार को किया। बायो केमेस्ट्री विभाग में स्थापित इस लैब में जीन की जांच होगी और विभिनन रोगों पर शोध किए जाएंगे। पहला शोध चेहरे पर पड़ने वाली छाई के कारणों पर शुरू कर दिया गया है। इसकी जिम्मेदारी डर्मेटोलाजी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा. सुनील कुमार गुप्ता को दी गई है। इस शोध के लिए 76 लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं। डा. सुरेखा किशोर ने कहा कि मालीक्यूलर बायोलाजी लैब शोध के लिए सबसे उत्तम लैब है। इसके माध्यम से शोध के अलावा उपचार की प्लानिंग भी की जाएगी। इससे डायगनेसिस (रोग के कारणों की जांच), प्रागनेसिस (रोग की दशा व भविष्य) व ट्रीटमेंट (किस हद तक उपचार हो सकता है) का पता चल सकेगा। इस लैब में जीन सिक्वेंसर मशीन लग जाने से यहां जीनोम सिक्वेंसिंग भी हो सकेगी। उम्मीद की जाती है कि शीघ्र ही यह मशीन भी लग जाएगी। बायो केमेस्ट्री विभाग के कार्यकारी अध्यक्ष डा. हरिशंकर जोशी ने कहा कि इस लैब के जरिये अपरिचित शारीरिक परिवर्तनों का पता लगाया जा सकेगा और बीमारी होने से पूर्व उसका प्रबंधन भी सुनिश्चित किया जा सकेगा। जैसे किसी को दो साल बाद कैंसर होने वाला है तो जीन की जांच में यह बात सामने आ जाएगी।

अंग्रेजी व सिलाई विषय में 1752 विद्यार्थी रहे अनुपस्थित

चंदौली। जिले में बुधवार माध्यमिक शिक्षा परिषद के हाईस्कूल व इंटरमीडिएट की परीक्षाएं बुधवार को भी हुईं। छठवें दिन अंग्रेजी व सिलाई विषय की परीक्षा कड़ी सुरक्षा

व्यवस्था के बीच कराई गई। परीक्षा के दौरान 17740 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि सख्ती के चलते 1752 ने परीक्षा छोड़ दी। सचल दल ने कई केंद्रों का निरीक्षण किया, लेकिन कोई नकलची पकड़ा नहीं जा सका। मुख्यालय समेत चकिया, इलिया, शहाबगंज, धानापुर, पीडीडीयू नगर, सकलडीहा, सैयदराजा, नियामताबाद, कमालपुर, कंदवा, ताराजीवनपुर, बबुरी, नौगढ़, धानापुर, बरहनी स्थित केंद्र पर ही परीक्षार्थी पहुंचे तो केंद्र के मुख्य द्वार पर सघन जांच के बाद उन्हें कक्ष में जाने की अनुमति दी गई। सुरक्षा के मद्देनजर इलाकाई पुलिस तैनात रही। हाईस्कूल के सिलाई विषय में 70 पंजीकृत परीक्षार्थियों में दो अनुपस्थित रहे, जबकि 68 ने परीक्षा दी। इंटरमीडिएट के अंग्रेजी विषय की परीक्षा में 17672 परीक्षार्थी शामिल हुए और 1750 उपस्थित नहीं हो सके। ये परीक्षाएं दो पालियों में हुईं। बलिया जिले में इंटर के अंग्रेजी विषय का पर्चा लीक होने के बाद कई जिलों इस विषय की परीक्षा निरस्त कर दी गई। इसकी जानकारी से परीक्षार्थी व अभिभावक असमंजस में पड़ गए। हालांकि जब उन्हें यह मालूम हुआ कि चंदौली की परीक्षा निरस्त नहीं हुई तो राहत की सांस ली। इस घटना के बाद जनपद के केंद्रों में सतर्कता और बढ़ा दी गई। जिला विद्यालय निरीक्षक डाक्टर वीपी सिंह राजकीय बालिका इंटर कालेज दिघवट, रामदेव गिरजा देवी इंटर कालेज नई बाजार महेसुआ, बापू इंटर कालेज पिपरी, भारतीय इंटर कालेज बरठी का निरीक्षण किया। इनके अलावा बीएसए, डायट प्राचार्य के नेतृत्व में गठित सचल दस्तों ने भी 14 केंद्रों का जायजा लिया।

सपा नेता मनुरोजन यादव समेत तीन आरोपितों पर इनाम बढ़ाने की तैयारी

गोरखपुर। चौरी चौरा में बवाल कराने वाले पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष के पति व सपा नेता मनुरोजन यादव समेत तीन आरोपितों पर इनाम बढ़ाने की तैयारी चल रही है।56 नामजद

आरोपितों में अभी तक 13 की ही गिरफ्तारी हो पाई है। शेष लोगों ने घर छोड़ दिया है।दबाव बनाने के लिए पुलिस आसपास के जिलों में रहने वाले रिश्तेदार व परिचितों के यहां दबिश दे रही है खोराबार के मिर्जापुर गांव निवासी मनुरोजन यादव मुकदमा दर्ज होने के बाद से ही फरार है। 26 मार्च की रात में चौरी चौरा, झंगहा, खोराबार के साथ ही कैंट व रामगढ़ताल थाने की टीम घर पहुंची लेकिन वह नहीं मिला।एसएसपी ने पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष के पति के साथ ही सपा के चौरी चौरा विधानसभा क्षेत्र के अध्यक्ष नरसिंह यादव व उसके सहयोगी अरविंद यादव पर 25-25 हजार का इनाम घोषित किया है। गिरफ्तारी के लिए गठित हुई पुलिस की 10 टीम नामजद आरोपितों की तलाश में गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज के साथ ही लखनऊ में छापेमारी कर रही है। एसएसपी डा. विपिन ताडा ने बताया कि आरोपितों की तलाश चल रही है। जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। झंगहा थाना क्षेत्र के राघोपट्टी गांव निवासी सेना के जवान धनंजय की सिक्किम में मौत हो गई। सम्मान न मिलने का आरोप लगा स्वजन के साथ ही सपा नेताओं ने 25 मार्च को चौरी चौरा के भोपा बाजार में जवान का शव रखकर जाम लगा दिया था। सात घंटे तक चले जाम के दौरान सपा नेताओं ने पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों पर पथराव करने के साथ ही गाडियों में तोड़फोड़ कर दी थी। इस मामले में सात एफआइआर दर्ज है।जिसमें 56 नामजद और 200 अज्ञात लोग आरोपित है। इंटरनेट मीडिया पर जवान के पिता का वीडियो वायरल हो रहा है। जिसमें जिलाधिकारी के आश्वासन देने पर धनंजय के पिता जाम लगाने वालों से अपील कर रहे हैं कि सड़क से हट जाइए। आप लोगों ने पूरा सहयोग दिया जिसके लिए आभारी हूं। अब हंगामा मत करिए। इसी दौरान भीड़ में शामिल एक युवक जिसके सिर पर लाल टोपी है, धनंजय के पिता से माइक यह कहते हुए छीन लेता है कि जब तक इंसाफ नहीं मिल जाता हम नहीं हटेंगे। इसके कुछ देर बाद ही उपद्रवियों ने पुलिस पर पथराव शुरू कर दिया।

बलिया में यूपी बोर्ड पेपर लीक मामले में पांच और आरोपितों पर मुकदमा, अब तक 22 लोग गिरफ्तार

बलिया। यूपी बोर्ड परीक्षा के अंग्रेजी विषय के प्रश्न पत्र लीक किए जाने के मामले में स्पेशल टास्क फोर्स और बलिया पुलिस का शिकंजा कसता जा रहा है। ताबड़तोड़ गिरफ्तारियां की जा रही हैं। गुरुवार को पांच और आरोपितों के

नाम जुड़ गए। बुधवार की शाम तक कुल 17 गुरुवार सुबह तक 22 लोग गिरफ्तार हो चुके थे। गुरुवार को पांच लोगों को हिरासत में लिया गया है। इनके खिलाफ उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा अधिनियम 1998 और धारा 66 बी आइटी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है। इस तरह हाईप्रोफाइल प्रकरण में कुल 22 लोगों पर शिकंजा कस गया है। मामले में डीआइओएस डा. ब्रजेश मिश्र व पत्रकार जेल भेजे जा चुके हैं। जबकि कई और लोगों के खिलाफ कार्रवाई तेज हो गई है। दो दिन पहले वायरल हो गया था पेपर : जिस अंग्रेजी विषय के वायरल पेपर को लेकर डीआइओएस विभाग कठघरे में खड़ा है, दरअसल वह मंगलवार को ही इंटरनेट मीडिया पर सुखिऱ्यां बटोर रहा था। मामले में कई और जिम्मेदारों की तलाश चल रही है। प्रकरण में पुलिस ने अलग-अलग थाना क्षेत्रों में कार्रवाई चल रही है। बलिया शहर, सिकंदरपुर और नगरा थाने में गिरफ्तार किए गए आरोपितों में तीन पत्रकार हैं। इसके अलावा कई लोग शिक्षण संस्थान से तालुकु रखते हैं। मामला मंगलवार को वायरल हुआ था। प्रशासन को इस मामले की भनक बुधवार को लगी। दोपहर में अचानक अंग्रेजी विषय की परीक्षा निरस्त करने के आदेश हुए और पुलिस ने गिरफ्तारियां शुरू कीं। बुधवार को इनकी हुई थी गिरफ्तारी : शहर कोतवाली पुलिस ने डीआइओएस डा. ब्रजेश मिश्र व अजीत ओझा को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इसी तरह नगरा पुलिस ने बृजभान यादव, जय प्रकाश यादव, जनार्दन यादव, सुनील कुमार, राकेश यादव, अनमोल, अनूप चौहान, अभिषेक यादव, दिग्विजय सिंह व मनोज गुप्ता को हिरासत में लिया जबकि सिकंदरपुर से शुभेन्द्र यादव, अहमद रजा, ओम प्रकाश वर्मा, सुधीर कुमार यादव व सुजीत वर्मा की गिरफ्तारी हुई थी।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा, गोरखपुर में जल जमाव से निपटने के लिए त्रिस्तरीय कार्ययोजना तैयार करें अधिकारी

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि किसी भी कीमत पर इस बार गोरखपुर शहर में जलजमाव नहीं होना चाहिए। मंगलवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से गोरखपुर के विकास कार्यों

की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि जलजमाव की समस्या से निपटने के लिए त्रिस्तरीय कार्ययोजना बनाई जाए। उन्होंने कहा कि पहले लघु अवधि की कार्य-योजना तैयार की जाए। उसके बाद मध्यम अवधि एवं अंत में दीर्घ अवधि की कार्ययोजना बनाकर काम किया जाए, जिससे हमेशा के लिए शहर को जल जमाव से मुक्त किया जा सके। उन्होंने इस संबंध में कार्ययोजना बनाकर जल्द भेजने को कहा। मुख्यमंत्री ने शहर में चल रहे सभी विकास कार्यों को बरसात से पहले हर हाल में पूरा करने का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि असुरन-मेडिकल रोड के दोनों ओर बनाए गए नालों को जल्द ठीक कर लिया जाए। जेल बाईपास का निर्माण मई महीने तक पूरा हो जाना चाहिए। जंगल कौडिया-मोहद्दीपुर सड़क के दोनों ओर मोहल्लों में नाला न बनने एवं विद्युत से जुड़ा कार्य अभी तक न होने के कारण जल निकासी नहीं हो पा रही है। मुख्यमंत्री ने सख्त निर्देश देते हुए कहा कि इस मार्ग से जुड़े सभी कार्य एक महीने के भीतर पूरा कर लिए जाएं। मुख्यमंत्री ने गोड़धोइया नाले के प्रस्ताव के बारे में भी जानकारी ली। उनके समक्ष इस प्रस्ताव का प्रस्तुतीकरण भी दिया गया। मुख्यमंत्री ने प्रस्तुत प्रस्ताव का सर्वे पूरा कराते हुए नगर विकास विभाग को वित्त पोषण के लिए निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि गोरखपुर विकास प्राधिकरण सड़क व नाली निर्माण का काम जल्द पूरा कराए। आवास विकास के क्षेत्र में सड़क व नाली निर्माण का काम आवास विकास परिषद द्वारा कराया जाएगा। अन्य क्षेत्रों में नगर निगम अवस्थापना निधि से सड़क व नाली का निर्माण कराने का निर्देश मुख्यमंत्री ने दिया। बैठक में उपस्थित मंडलायुक्त ने जल जमाव से मुक्ति के लिए चल रही चार प्रमुख परियोजनाओं करीब 33 करोड़ रुपये लागत की ग्रीन सिटी परियोजना, 244 करोड़ रुपये लागत वाली गोड़धोइया नाला परियोजना, सड़क व नाली निर्माण के लिए 275 करोड़ रुपये की परियोजना की वर्तमान स्थिति की जानकारी दी। बैठक में जिलाधिकारी विजय किरन आनंद, जीडीए उपाध्यक्ष प्रेमरंजन सिंह, नगर आयुक्त अविनाश सिंह, जीडीए के मुख्य अभियंता पीपी सिंह, पीडब्लूडी के मुख्य अभियंता बीबी श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

वाराणसी में जौनपुर के वृद्ध का मिला शव

वाराणसी। मंडुआडीह थाना क्षेत्र के बरेका कैम्पस में बने अंडरपास के पास गुरुवार की सुबह एक पेड़ से लटकता वृद्ध का शव मिला है। शव

मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। सूचना पाकर मंडुआडीह पुलिस के साथ रेलवे पुलिस भी पहुचकर जांच में जुट गई है। शव के पास से मिले आधार कार्ड से मृतक की पहचान वचन सरोज 70 वर्ष निवासी ग्राम अमिलिया, पोस्ट- बरामनपुर जिला जौनपुर का है। जानकारी के अनुसार गुरुवार को बरेका अंडर पास की तरफ जाने वाले रास्ते पर रेलवे लाइन के किनारे पेड़ पर एक वृद्ध का शव लटकता देख राहगीरों ने पुलिस को सूचना दिया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची मंडुआडीह पुलिस पुलिस ने शिनाख्त कराने का प्रयास किया व शव को पेड़ से उतरावाया। शव के दोनों हाथ बांधकर लुंगी से फंदा बनाकर जमीन से लगभग 25 फीट ऊपर पेड़ से लटका दिया गया है। आशंका जाहिर की जा रही है कि हत्या दो-तीन दिन पहले की गई होगी। मौके पर स्थानीय पुलिस व फोरेंसिक टीम सहित ए डी सी पी वरुणा जोन प्रबल प्रताप सिंह व ए सी पी कैन्ट रतनेश्वर सिंह व आरपीएफ भी पहुंच कर घटना की जांच में जुटी हुई है। एडीसीपी प्रबल प्रताप सिंह ने मीडिया को बताया कि मृतक के पास मिले आधार कार्ड के आधार पर मृतक की शिनाख्त करायी जा रही है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों को खंगाल कर हत्यारों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी की जाएगी। चौकी इंचार्ज के प्रति स्थानीय लोगो मे आक्रोश : स्थानीय लोगों ने बताया कि बरेका चौकी इंचार्ज की सुस्ती के चलते यह घटना हुई है। क्योंकि बगल में नाथूपुर गेट के समीप शराब की दुकान पर दिन भर अराजक तत्वों का जमावड़ा लगा रहता है और अगर इन लोगों की माने तो शराबी रोजाना शाम को पी कर आने जाने वाली महिलाओं व लड़कियों के साथ छेड़खानी भी करते है लेकिन बरेका चौकी प्रभारी और उनकी टीम इस तरफ से आंख बंद किये हुए हैं।

गाजीपुर में सब्जी विक्रेता की हत्या कर शव को फेंका, पोखरे के पास शव मिलने पर जांच में जुटी पुलिस

गाजीपुर। जंगीपुर थाना क्षेत्र के वार्ड नम्बर नौ निवासी सब्जी विक्रेता राहुल कुशवाहा (21) की हत्या कर शव को फोरलेन के किनारे गेहूं के खेत मे फेंक दिया। इससे स्वजन में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। फोरेंसिक की टीम ने सभी साक्ष्य को एकत्र को जांच कर रही है। वहीं राहुल की हत्या कैसे और क्यों की गई है, इसकी जानकारी पुलिस को अब तक नहीं हो सकी है। राहुल जंगीपुर में सब्जी बेचता है। स्वजन के अनुसार 29 मार्च की रात किसी का काल आया और राहुल बिना किसी को बताए सनन करके चला गया। रात में घर नहीं लौटा तो स्वजन हैरान परेशान हो गए। अगले दिन काफी खोजबीन की, लेकिन उसका पता नहीं चल सका। गुरुवार की सुबह पीठिया की बारी (बंगाली बाबा पोखरा) फोर लेन के किनारे गेंहू के खेत मे शव मिलने से पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गयी। सूचना पर राहुल के स्वजन भी पहुंचे और राहुल का शव देखकर दहाड़े मारकर रोने-विलखने लगे। तबतक पुलिस भी मौके पर पहुंच गई।

सीनियर सिटीजन हेल्पलाइन 14567 के बारे में बुजुर्गों को किया गया जागरूक

(आधुनिक समाचार सेवा)
अश्विनी कुमार ठाकुर

सुकृत (सोनभद्र)।जनपद सोनभद्र के करमा ब्लॉक अंतर्गत ग्राम सभा सुकृत में बलिराम विश्वकर्मा जी के घर पर सोनभद्र मानव सेवा आश्रम ट्रस्ट के सौजन्य से दिनांक 29 मार्च 2022 को ठसीनियर सिटीजन हेल्पलाइनठ - 14567 के फील्ड रिस्पांस ऑफिसर सोनभद्र अभिषेक पाठक के द्वारा बुजुर्गों को जागरूक किया गया। श्री पाठक ने बुजुर्गों को जागरूक करते हुए कहा कि इस हेल्पलाइन नंबर 14567 पर फोन करके अपनी समस्या को दर्ज कराएं। शिकायत दर्ज होने के 72 घण्टे के अंदर समस्या का समाधान किया जाएगा। इस मौके पर सीनियर सिटीजन हेल्पलाइन के फील्ड रिस्पांस ऑफिसर सोनभद्र अभिषेक पाठक, राष्ट्रीय अध्यक्ष गौतम विश्वकर्मा, सह संस्थापिका श्रीमती शांति देवी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अरुण कुमार गुप्ता, जिला सचिव सोनभद्र दिनेश कुमार, जिला सचिव सोनभद्र महिला मंच राधिका यादव, सदस्य सूरज मणि, बलिराम विश्वकर्मा, दयाराम विश्वकर्मा व शिवमुनि विश्वकर्मा, अनिल विश्वकर्मा, गोरखनाथ तथा बुजुर्ग महिला पुरुष उपस्थित रहे।

डी ए वी पब्लिक स्कूल खडिया में वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में स्टार छात्रों ने बनाया दबदबा

(आधुनिक समाचार सेवा)
अश्विनी कुमार ठाकुर

शक्तिनगर (सोनभद्र)।डी ए वी पब्लिक स्कूल खड़िया में आज एनुअल रिपोर्टिंग डे कार्यक्रम संपन्न हुआ।इस पावन अवसर पर मुख्य अतिथि श्री बी के सिंह प्राचार्य डी ए वी पब्लिक स्कूल अनपरा, (मैनेजर डीएवी खड़िया) को सर्वप्रथम पुष्पगुच्छ प्रदान कर एवं तिलक लगाकर उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। तदुपरांत मुख्य अतिथि एवं विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती संध्या एल पांडेय ने अपने वरिष्ठ शिक्षकों के साथ वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच सामूहिक दीप प्रज्वलित कर वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सर्वप्रथम डीएवी गान एवं सरस्वती वंदना के माध्यम से जहां वाणी की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती के प्रति आभार व्यक्त हुआ वहीं विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती संध्या एल पांडेय जी ने अपने स्वागत भाषण के दौरान मुख्य अतिथि सहित सभी अभिभावकों का स्वागत करते हुए बताया कि परिवार नागरिक गुणों की प्रथम पाठशाला है। छात्रों के विकास में विद्यालय के साथ-साथ अभिभावकों के सहयोग की भी महती भूमिका होती है। साथ ही साथ विद्यालय की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि आज एलकेजी से लेकर कक्षा कक्षा 7 एवं नवम के छात्रों को वार्षिक रिपोर्ट कार्ड प्रदान कर शैक्षणिक एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं के उपलब्धि प्राप्त छात्रों को मुख्य अतिथि महोदय द्वारा प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार वितरण के दौरान सर्वप्रथम मुख्य अतिथि महोदय ने ई ई डी पी के अंतर्गत एलकेजी से लेकर कक्षा दो तक के 16 छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में जिसके अंतर्गत सुलेख, वाचन, तीव्र गति से पाठन एवं लेखन की क्षमता कार्यकुशलता, नेतृत्व क्षमता एवं कहानी वक्ता के मानकों के आधार पर मुख्य अतिथि द्वारा उन्हें प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर उत्साहवर्धन किया गया। जहां शैक्षणिक क्षेत्र में कक्षावार प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। वही कक्षा 3 से लेकर 5 ,6 से लेकर 8 तथा 9 से लेकर 12वीं तक के छात्रों को तीन ग्रुप में विभाजित कर कल्चरल स्टार एवं स्टार चाइल्ड के रूप में प्रत्येक ग्रुप से छात्र-छात्राएं पुरस्कृत हुई। जहां सीबीएसई बोर्ड द्वारा सत्र 2020-21 में कक्षा दसवीं के छात्र ध्रुव प्रकाश को 92 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर पुरस्कृत किया गया वही कक्षा 12वीं की छात्रा प्रिया कुशवाहा को 96.8 प्रतिशत अंक प्राप्त करने की उपलब्धियों पर प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदानकिए गए वार्षिक उपलब्धियों के आधार पर श्रद्धानंद सदन को विनर का खिताब मिला। मुख्य अतिथि महोदय ने अपने संबोधन के दौरान बताया कि डीएवी संस्थाएं ज्ञान के साथ विज्ञान अर्थात संस्कृति के साथ संस्कार की शिक्षाएं प्रदान करती हैं। साथ ही साथ उन्होंने विद्यालय उपलब्धि की चर्चा करते हुए प्राचार्या श्रीमती संध्या एल पांडेय के कार्यों की सराहना की कार्यक्रम सफल तथा सराहनीय रह कार्यक्रम के दौरान कोविड-19 के नियमों का पालन किया गया।

किशोरियों में सेनेटरी पैड का हुआ निःशुल्क वितरण

(आधुनिक समाचार सेवा)
अश्विनी कुमार ठाकुर

सोनभद्र । जनपद सोनभद्र के करमा ब्लॉक अंतर्गत ग्राम सभा सुकृत में बलिराम विश्वकर्मा जी के दरवाजे पर सोनभद्र मानव सेवा आश्रम ट्रस्ट के सौजन्य से आज दिनांक 29 मार्च 2022 को संस्था की जिला सचिव सोनभद्र राधिका यादव जी के द्वारा किशोरियों को जागरूक कर सेनेटरी पैड का निःशुल्क वितरण किया गया। इस मौके पर सीनियर सिटीजन हेल्पलाइन के फील्ड रिस्पांस ऑफिसर सोनभद्र अभिषेक पाठक, राष्ट्रीय अध्यक्ष गौतम विश्वकर्मा, सह संस्थापिका श्रीमती शांति देवी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अरुण कुमार गुप्ता, जिला सचिव सोनभद्र दिनेश कुमार, जिला सचिव सोनभद्र महिला मंच राधिका यादव, सदस्य सूरज मणि, अनिल विश्वकर्मा, बालिकाएं व ग्रामीण मौजूद रहे।

एडमिन टाइटंसको हराकर बॉयलर कमांडोज सेमीफाइनल में पहुंचा

(आधुनिक समाचार सेवा)
अश्विनी कुमार ठाकुर

रेनू सागर (सोनभद्र)। में चल रहे आर.पी.एल(रेनू सागर प्रीमियर लीग टूर्नामेंट) एडमिन टाइटंस और बॉयलर कमांडोज के बीच खेले गए रोमांचक मैच में बॉयलर कमांडोज ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करते हुए 5 विकेट से मैच जीतकर सेमीफाइनल में अपनी जगह सुनिश्चित किया। बॉयलर कमांडोज की तरफ से दीपक लाल प्रजापति ने बेहतरीन 27 रन बनाए एवं संतोष कुमार ने 2 ओवर में 8 रन देकर एक विकेट लिया। वही एडमिन टाइटंस के तरफ से सुधाकर मिश्रा ने 32 रन एवं सुमित सिंह ने 18 रन का योगदान दिया पर वह अपनी टीम को हार से नहीं बचा सके

माटीकला की श्रेष्ठ कृतियों के लिए सम्मानित हुए कारीगर

मीरजापुर । माटीकला के श्रेष्ठ कृतियों के आधार पर शिल्पी, कारीगर, उद्यमियों को सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश माटीकला बोर्ड लखनऊ के सदस्य अजीत प्रजापति ने सम्मानित करते हुए कहा कि सरकार की कल्याणकारी योजना के माध्यम से लोगों को स्वरोजगार मुहैया कराकर आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। समारोह के सदस्य ने प्रथम पुरस्कार भरत लाल प्रजापति पुत्र स्व. मिठाई लाल ग्राम चेराकापुरा चुनार, द्वितीय पुरस्कार सुनील कुमार पुत्र विजय प्रजापति राबर्ट्सगंज सोनभद्र एवं तृतीय पुरस्कार बृजेश कुमार प्रजापति पुत्र रमेश कुमार प्रजापति ग्राम अहिमनपुर खम्हरिया भदोही को उनके प्रदर्शित व उत्पादित उत्कृष्ट कृतियों के लिए दिया। जिला ग्रामोद्योग अधिकारी ध्यानचंद्र ने बताया कि समारोह में वित्तीय वर्ष 2021-22 में माटीकला टूलकिट्स वितरण योजना के तहत चयनित 60 लाभार्थियों को निश्शुल्क विद्युत चालित चाक व मोटराईज्ड दोना पत्तल मेकिंग मशीन वितरण के तहत चयनित 08 लाभार्थियों को निश्शुल्क वितरण किया गया। उपायुक्त जिला उद्योग केन्द्र वीके चौधरी ने उत्साहवर्धन किया।

1.89 करोड़ से प्रेक्षागृह तैयार, अब धूमधाम से होगी गरीब बेटियों की शादी

मीरजापुर । गरीब पिता को बेटियों की शादी के लिए अब फिजूल खर्च नहीं करना पड़ेगा। धूमधाम से बेटियों की शादी कर सकेंगे। शादी विवाह समारोह में बहुत पैसे की फिजूलखर्च होती है। सबसे महंगा लॉन का किराया होता है। नगर पालिका की ओर से सिटी क्लब मैदान पर आधुनिक प्रेक्षागृह का निर्माण कराया गया है। अब गरीब पिता को अधिक पैसा खर्च कर लॉन बुक करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। प्रेक्षागृह में वो सारी सुविधाएं होंगी, जो लाख रुपये खर्च करने के बाद प्राइवेट लॉन में मिलती है बेटी के हाथ पीले करना हर माता-पिता का सपना होता है। बेटी की शादी की चिता उन्हें बेटी के पैदा होते ही सताने लगती है। खासकर जो लोग आर्थिक रूप से कमजोर हैं, वे एक-एक पैसा जोड़ते हैं ताकि बेटी की शादी में कोई परेशानी न आए। ऐसे ही लोगों की जिम्मेदारियों को सरकार बांट रही है। हर पिता चाहता है कि उसकी बेटी की शादी धूमधाम से हो और कोई कमी न रह जाए। इसी कारण आर्थिक रूप से कमजोर होने के बाद भी गरीब पिता को शहर के बीच बने लॉज बुक करने के लिए 50 हजार से लेकर दो लाख से अधिक रुपये खर्च करना पड़ता है, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। गरीब पिता अपनी बेटी की शादी करने में कर्जदार न बने, इसके लिए नगर पालिका की ओर से अवस्थापना निधि के अंतर्गत 1.89 करोड़ रुपये की लागत से सिविल लाइन स्थित सिटी क्लब मैदान पर आधुनिक प्रेक्षागृह का निर्माण कराया गया है। हालांकि अभी प्रेक्षागृह का किराया तय नहीं किया गया है, लेकिन इसका किराया प्राइवेट लॉन से कम होगा। प्रेक्षागृह बनने से शादी विवाद समारोह के साथ ही विभागीय मीटिंग व कांफ्रेंसिग भी की जा सकेगी। आधुनिक सुविधाओं से युक्त प्रेक्षागृह पूरी तरह से वातानुकूलित है। चार सौ लोगों की क्षमता वाले प्रेक्षागृह में कांफ्रेंस हाल, मीटिंग हाल, स्टेज, दो हाल, आठ कमरा व शौचालय बनाए गए हैं। चैत्र नवरात्र में प्रेक्षागृह का उद्घाटन कर जनता को सौंपा जाएगा। नवरात्र बाद लगन भी शुरू हो रहा है। आधुनिक प्रेक्षागृह से गरीब परिवार को लाभ मिलेगा ही, फिजूल खर्च भी बचेगा।

शीत-गर्म से बचे नहीं तो आएंगे सर्दी जुकाम की चपेट में

मीरजापुर : इस मौसम में बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है वरना आप बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं। इस मौसम में लोगों को कमजोरी महसूस होती है। पेशाब पीला होने लगता है। विभिनन्‍ तरीके की बीमारियां भी होती हैं। ऐसे में जरा सी लापरवाही बरती तो सर्दी-जुकाम की चपेट में आ जाएंगे। इससे बचना है तो आपको शीत-गरम से बचना होगा। ठंडी वस्तुओं का सेवन नहीं करना है। एसी से निकलने के बाद तत्काल धूप में नहीं जाना है। धूप से आने के बाद कुछ देर बैठने के बाद ही पानी पीना है। पानी का सेवन अधिक करें। भोजन भी ताजा करें। दोपहर में फलों का सेवन करें। ऐसा नहीं करने से रोग का शिकार हो जाएंगे। बाहर का सामान खाने से बचें, नहीं तो डायरिया की चपेट में भी आ सकते हैं। शुगर के मरीजों को निमोनिया होने का खतरा रहता है। किडनी को बचाने के लिए शुगर व बीपी को नियंत्रित करें। गुर्दे में पथरी है तो उसका इलाज कराएं। यह जानकारी फिजिशियन एवं गुर्दा रोग विशेषज्ञ डा. आनंद कुमार सिंह ने दैनिक जागरण के लोकप्रिय कार्यक्रम हैलो डाक्टर में बुधवार को कलेक्ट्रेट रोड स्थित कार्यालय में पाठकों के सवालों का जवाब देते हुए दी।

राजगढ़ ब्लाक के कई गांवों में पेयजल संकट गहराया

भावां (मीरजापुर) । तहसील अंतर्गत राजगढ़ ब्लॉक के कई गांवों में पेयजल संकट गहरा गया है। भूगर्भ जलस्तर और नीचे जाने के कारण जनपद के कई इलाकों में संकट बढ़ने के आसार हैं। पानी की कमी का खौफ इस कदर है कि बूढ़े, बच्चे महिलाएं पहले पानी लेने के लिए कहीं हैंडपंपों पर मारामारी कर रहे हैं तो कहीं बिजली के आने का इंतजार। पहले पानी लेने के लिए कई गांवों में लोग रतजगा कर रहें हैं। क्षेत्र में गर्मी अभी पूरी तरह से शुरू नहीं हुई लेकिन पानी का जलस्तर खिसकने से पेयजल की समस्या सताने लगी। 175182 आबादी है। 73218 वर्ग मीटर में 161 ग्राम पंचायत फैले हैं। इस ब्लॉक की सबसे बड़ी समस्या पेयजल है। पानी का जलस्तर नीचे खिसकने से क्षेत्र में लगे हैंडपंप एक दो बाल्टी पानी देने के बाद हांफने लगते हैं। कुछ स्थानों पर सरकार ने समबर्सिबल पंप लगवाए हैं तो दबंगों ने उस पर कब्जा कर स्वयं का हित साध रहे हैं। पानी की समस्याओं से जूझ रहे करौंदा, इमलिया, रैकरी, ददरा पहाड़ी, बिशुनपुर, मटिहानी, अटारी, लालपुर, राजापुर, बघौड़ा आदि ग्राम हैं। अटारी के पूर्व बीडीसी रामकिशुन आदिवासी के अलावा गांव की शीला, विक्की, रामजस, सुरेंद्र, पूजा तथा बिशनपुर के शिवकुमार, सुरेंद्र चौहान, रिकी देवी ने बताया कि हमारे गांव में लगा सोलर पंप दो सालों से खराब है और उसकी टंकी फट गई है। अधिकारियों से कई बार कहा गया पर दूसरा टंकी नहीं लगा। न तो अटारी ग्राम के सोलर पंप का जला मोटर बदला गया। करौंदा ग्राम पहाड़ी पुरवा के 500 ग्रामीण साइकिल में डिब्बा सगड़ी पर टंकी रखकर पटेवा से पानी ढो रहे हैं। ग्रामीण दयाराम, कलावती,मनोरमा,चंदा आदि ने बताया कि सभी हैंडपंप खराब हो गए हैं। इस संबंध में राजगढ़ के बीडीओ शैलेंद्र सिंह ने बताया कि सभी ग्राम पंचायतों में प्रधान और बीडीओ को पेयजल की व्यवस्था के लिए कहा गया है,जहां अतिआवश्यक होगा वहां पर टैंकर या अन्य विकल्पों से जल आपूर्ति होगी।

नकल पर नकेल, सात ने वाणिज्य तो 1347 ने छोड़ी अंग्रेजी परीक्षा

मीरजापुर । माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षा के दौरान बुधवार को पहली पाली में हाईस्कूल में वाणिज्य व इंटरमीडिएट में अंग्रेजी विषय की परीक्षा हुई। सख्ती के चलते सात ने हाईस्कूल वाणिज्य तो 1347 परीक्षार्थियों ने इंटरमीडिएट अंग्रेजी की परीक्षा छोड़ दी। नकल रोकने लिए सचल दल लगाए गए हैं। हाईस्कूल की वाणिज्य विषय की परीक्षा में पंजीकृत 188 में से 181 परीक्षार्थी शामिल हुए। सात ने परीक्षा छोड़ दी। वहीं इंटरमीडिएट अंग्रेजी विषय की परीक्षा में पंजीकृत 20396 में से 19049 परीक्षार्थी परीक्षा देने पहुंचे। 1347 ने परीक्षा छोड़ दी। परीक्षा के दौरान उड़ाका दल सक्रिय दिखा। अनुचित साधन प्रयोग में पकड़ा गया परीक्षार्थी मीरजापुर : महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की ओर से संचालित विषम सेमेस्टर परीक्षा 2022 के प्रथम पाली में बुधवार को अनुचित साधन का प्रयोग करते समय परीक्षार्थी पकड़ा गया।केबीपीजी कालेज, एसएसपीडी तिसुही, स्वामी गोविदाश्रम सनतकोत्तर महाविद्यालय पैड़ापुर एवं राम खेलावन पीजी कालेज कलवारी के बीएड प्रथम सेमेस्टर के कुल 329 परीक्षार्थी शामिल हुए रामललित विधि महाविद्यालय कैलहट के कुल 267 परीक्षार्थी परीक्षा में समिल्लित हुए। द्वितीय पाली में घनश्याम बिनानी मैनेजमेंट कालेज बीबीए पंचम सेमेस्टर के कुल 52 परीक्षार्थी सम्मिलित हुए। परीक्षा के दौरान प्राचार्य डा. अशोक कुमार सिंह, डा. अरविद मिश्र की अगुवाई में उड़ाका दल ने केबीपीजी कालेज के बीएड के प्रथम सेमेस्टर के परीक्षार्थी को अनुचित साधन प्रयोग में पकड़ा।

निकास द्वार से प्रवेश पर रोक, लगा सीसीटीवी कैमरा

विंध्याचल (मीरजापुर) । मंडलायुक्त योगेश्वर राम मिश्र व डीआइजी आरके भारद्वाज ने बुधवार को विंध्याचल पहुंचकर चैत्र नवरात्र मेला की तैयारियों का जायजा लिया। सुरक्षा व्यवस्था मुकम्मल करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मंडलायुक्त ने मेला क्षेत्र का भ्रमण कर प्रशासनिक भवन पर बैठक कर तैयारियों की समीक्षा की। कहा कि दूर-दराज से आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो। कहा कि निकास द्वार से दर्शन नहीं कराया जाएगा। इसकी निगरानी के लिए निकास द्वार पर दो-दो सीसीटीवी कैमरा लगाए जायं। राजकीय निर्माण निगम के अधिकारियों को निर्देशित किया कि मंदिर जाने वाले प्रमुख मार्गों पर साफ-सफाई का उचित प्रबंध किया जाए। जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार ने कहा कि मेला क्षेत्र में निर्धारित स्थल पर लगे बैरियर के आगे ही वाहन रोक दिया जाए। पुरानी व नई वीआइपी मार्ग पर टेंट लगवाने का कार्य तत्काल पूर्ण करने का निर्देश दिया। नाव संचालन को लेकर कहा कि केवल लाइसेंस धारक नाविक ही नाव का संचालन करेंगे। 18 वर्ष से कम आयु के नाविक नाव का संचालन नहीं करेंगे। यदि ऐसा पाया जाता है उसका लाइसेंस निरस्त किया जाएगा। बिना लाइफ जैकेट के नाव का संचालन नहीं किया जाएगा। इस दौरान पुलिस अधीक्षक अजय कुमार सिंह, एडीएम वित्त एवं राजस्व शिवप्रताप शुक्ल, सीएमओ डा. राजीव सिंघल, नगर मजिस्ट्रेट विनय कुमार सिंह, सीओ सिटी प्रभात राय, अधिशासी अभियंता विद्युत मनोज कुमार यादव, अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग मिथलेश कुमार आदि थे। अपर पुलिस अधीक्षक संजय वर्मा ने बताया कि मेले में किसी प्रकार की अप्रिय घटना न होने पाए। इसके लिए एनडीआरएफ की दो टीम एवं क्यूआरटी टीम बुलाई है। दो हाई फ्रिक्वेंशी स्पेशल ड्रोन कैमरा भी मुंबई से मंगाया गया है। रोडवेज परिसर में हाई प्रोफाइल ड्रोन कैमरा का ट्रायल भी किया गया।

मां विध्यवासिनी के दर्शन से पूर्व देनी होगी अग्निपरीक्षा

मीरजापुर । चैत्र नवरात्र पर विध्यधाम आने वाले श्रद्धालुओं को मां विध्यवासिनी का दर्शन करने से पूर्व अगिन्परीक्षा देनी होगी। प्रशासनिक अधिकारियों के निरीक्षण व निर्देश का दौर तो लगातार जारी है लेकिन तैयारियां काफी सुस्त है। अगर समय रहते तैयारियां तेज नहीं हुई तो चैत्र नवरात्र के दौरान श्रद्धालुओं को असुविधाओं का सामना करना पड़ेगा मंडलायुक्त, डीआइजी, डीएम, एसपी समेत प्रशासनिक अधिकारी लगातार नवरात्र मेला तैयारी पर नजर बनाए रखे हैं निरीक्षण व निर्देश का दौर चल रहा है। अब नवरात्र शुरु होने पर निरीक्षण व निर्देश का असर पता चलेगा।चैत्र नवरात्र शुरु होने से पहले ही प्रशासनिक तैयारियां चल रही है। दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए नगर पालिका परिषद आवागमन, सफाई और प्रकाश व्यवस्था की तैयारी को ठीक कर रहा है। विध्य कारिडोर निर्माण के लिए किए गए तोड़फोड़ के बिखरे मलबों और जाम नालियों के कारण नगर पालिका परिषद की जिम्मेदारी और बढ़ गई है। जिस गति से तैयारियां चल रही है, उससे यह नहीं लगता कि नवरात्र से पूर्व सारी तैयारियां पूर्ण कर ली जाएगी। अब सूरज की तपिश तेज होने लगी है। लगातार गर्मी में वृद्धि से तापमान 40 डिग्री स्पर्श करने को बेताब है। ऐसे में गंगा किनारे रेत पर नंगे पांव चलना किसी अगिन्परीक्षा से कम नहीं होगी। सड़क से लेकर गंगा घाट तक पहुंचने वाले मार्ग पर गंदगी तो है ही, उबड़-खाबड़ भी है। पहाड़ी इलाका होने के नाते विध्य पर्वत पर त्रिकोण मार्ग पर पेयजल समस्या बनी हुई है। यहां तक छाया की भी व्यवस्था नहीं है जिससे श्रद्धालु धूप से बचाव कर सके।

गंगा कटान रोकने के लिए 8.78 करोड़ की मंजूरी

मीरजापुर । बाढ़ से गंगा घाटों की सुरक्षा व कटान से बचाव के लिए बुधवार को अभियंताओं ने स्थलीय निरीक्षण किया। नाबार्ड के वरिष्ठ सलाहकार एवं उत्तर प्रदेश सिचाई विभाग के पूर्व प्रमुख अभियंता अजय कुमार सिंह ने बताया कि मीरजापुर में दो गंगा घाटों की कटान रोकने के लिए नाबार्ड से मिले प्रस्ताव को स्वीकृति मिल गई है। अप्रैल से इस पर कार्य शुरू हो जाएगा। नाबार्ड से दो घाटों की कटान रोकने के लिए आठ करोड़ 78 लाख रुपये की स्वीकृति मिली है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण चौबेघाट (श्मशानघाट) है। चौबेघाट पर कटान से शवदाह में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। किनारे उबड़-खाबड़ होने से दुर्घटनाएं भी होती हैं। इसके अलावा छानबे ब्लाक के हरगड़ पम्प कैनाल घाट की कटान रोकने के लिए एक करोड़ 16 लाख रुपये की स्वीकृति नाबार्ड से मिली है। नगर विधायक रतनकर मिश्र ने कहा कि गंगा कटान को रोकने के लिए बरसात के पूर्व तेजी से कार्य होने पर बरसात में श्मशानघाट पर शवदाह के लिए आने वालों को असुविधा से मुक्ति मिलेगी। नगर विधायक ने कहा कि घोड़े शहीद सीएमओ कार्यालय से लेकर फतहां तक गंगा कटान पर पिछले वर्ष काम कराया गया था। इससे लोगों को राहत मिल रही है। इससे पूर्व अजय सिंह ने मां विध्यवासिनी की चौखट पर शीश नवाया। वे वाराणसी के बाद विध्यधाम आए थे। यहां से वे लखनऊ रवाना हो गए। वे वर्ष 2013-14 में बाणसागर विभाग में अधीक्षण अभियंता थे।

पुल से युवक ने लगाई छलांग, लापता

मझवां (मीरजापुर) । क्षेत्र के भटौली-बरैनी पक्का पुल से बुधवार की शाम युवक ने गंगा में छलांग लगा दी। इसकी जानकारी होते ही हड़कंप मच गया। पुल पर भारी संख्या में लोगों की भीड़ जुट गई। स्वजन ने इसकी जानकारी पुलिस को दे दी है। क्षेत्र के बरैनी भटौली पुल से बरैनी गांव निवासी विक्रम उर्फ लल्ला माझी (24) पुत्र सुरेश कुमार उर्फ गुड्डू मांझी की कुछ दिनों से दिमागी हालत ठीक नहीं थी। वाराणसी से इलाज चल रहा था। रविवार को इलाज के दौरान ही वह वाराणसी से घर भाग आए थे। इसी बात को लेकर बुधवार को परिवार के लोगों से विवाद हो गया था। थोड़ी देर बाद युवक बरैनी - भटौली पुल की तरफ भागने लगा, जिसे पकड़ने के लिए घर के अलावा आसपास के लोग दौड़े लेकिन उसे पकड़ नहीं पाए। विक्रम पुल पर पहुंचते ही गंगा में छलांग लगा दिया। इस संबंध में थानाध्यक्ष रामस्वरूप वर्मा ने बताया कि घटना की जानकारी युवक के स्वजन ने नहीं मिला दी। युवक की तलाश के लिए गोताखोरों को भी लगाया जाएगा।

दक्षिण अफ्रीका को 137 रनों से हराकर वर्ल्ड कप के फाइनल में पहुंची इंग्लैड

नई दिल्ली। इंग्लैंड की टीम आइसीसी महिला क्रिकेट वर्ल्ड कप के फाइनल में पहुंच गई है। क्राइस्टचर्च के हेगले ओवल मैदान पर खेले गए दूसरे सेमीफाइनल मैच में इंग्लैंड की टीम ने दक्षिण अफ्रीका को 137 रनों से हराकर फाइनल में जगह बनाई। इसके साथ ही दक्षिण अफ्रीका की टीम एक बार फिर से फाइनल में जगह बनाने से चूक गई है। चाहे महिला हो या

पुरुष की टीमें दोनों का वर्ल्ड कप में बेहद खराब रिकार्ड रहा है। दोनों टीमें आजतक न 50 ओवर के मैच में और न टी20 वर्ल्ड कप के फाइनल में जगह बना पाई है जबकि दोनों ने अंतिम चार में 8 बार जगह बनाई है इससे पहले टास हार कर पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड की टीम ने डेनियल वेट के शानदार 129 रन और सोफिया इंकली के 60 रनों की पारी की बदौलत निर्धारित 50 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 293 रनों का सम्मानजनक स्कोर खड़ा किया था। ये डेनियल की वर्ल्ड कप में पहली और वनडे में दूसरी शतकीय पारी थी। दक्षिण अफ्रीका की तरफ से शबनीम इस्माइल ने अच्छी गेंदबाजी की और 46 रन देकर 3 विकेट हासिल किए। इस्माइल के अलावा काप और मसाबता क्लास ने 2-2 विकेट अर्जित किए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीकी टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही और 44 रन के स्कोर पर उसने अपने तीन शीर्ष बैटर को गंवा दिया। टीम को पहला झटका 1 रन के स्कोर पर लगा जब उनकी प्रमुख बैटर लोरा वुलवर्ट बिना खाता खोले आउट हो गई। उसके बाद लगातार अंतराल पर दक्षिण अफ्रीका के विकेट गिरते चले गए और पूरी टीम 156 रन बनाकर आलआउट हो गई। वर्ल्ड कप के फाइनल में अब इंग्लैंड का सामना 6 बार खिताब जीत चुके आस्ट्रेलिया से होगा जो पहले ही फाइनल में पहुंच चुकी है। फाइनल मैच 3 अप्रैल को खेला जाएगा। पहले सेमीफाइनल मैच में आस्ट्रेलिया ने वेस्टइंडीज को 157 रनों से हराकर फाइनल में जगह बनाई थी। इस बार भारतीय टीम अंतिम चार में जगह नहीं बना पाई थी और अपने आखिरी लीग मैच में दक्षिण अफ्रीका से हारकर बाहर हो गई थी।

कप्तान डु प्लेसिस ने की दिनेश कार्तिक की तारीफ कहा- इस मामले में धौनी की तरह हैं डीके

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के छठे मुकाबले में आखिरकार आरसीबी ने जीत से खाता खोल लिया है। लो स्कोरिंग वाले इस मैच में आरसीबी ने 3 विकेट से कोलकाता को हराकर इस सीजन की पहली जीत दर्ज की। इस जीत

में टीम के हीरो रहे शहबाज अहमद और दिनेश कार्तिक जिन्होंने कुछ अच्छे शाट्स लगाए और एक वक्त रोमांचक हुए मैच को अपनी टीम की तरफ मोड़ दिया। कार्तिक ने 7 गेंदों पर 14 रन की छोटी लेकिन महत्वपूर्ण पारी खेली। जीत के बाद टीम के कप्तान फाफ डु प्लेसिस ने विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक की तारीफ की और उनकी तुलना धौनी से की उन्होंने कहा टीम को डीके के अनुभव का फायदा मिला हालांकि रन हमसे ज्यादा दूर नहीं थे लेकिन वे काफी शांत नजर आए। वह शायद उतना ही शांत है जितना कि एमएस धौनी अंतिम पांच ओवरों में रहते हैं आपको बता दें कि फाफ इससे पहले धौनी की कप्तानी में ही सीएसके की टीम में थे। उन्होंने पहले भी धौनी की कप्तानी की खूब तारीफ की थी और कहा था कि उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला है। इससे पहले कोलकाता के बल्लेबाजों को आरसीबी के गेंदबाजों ने शुरुआत में काफी परेशान किया। केकेआर की टीम पावरप्ले में ही अपना तीन विकेट गंवा चुकी थी। युवा गेंदबाज आकाशदीप और मोहम्मद सिराज ने आरसीबी को बेहतरीन शुरुआत दिलाई। डुप्लेसिस ने कहा खुश हूं अच्छी जीत है वास्तव में छोटे स्कोर का पीछा करने में हमेशा आपको पाजिटिव रहना पड़ता है लेकिन उनके तेज गेंदबाजों ने अच्छी गेंदबाजी की। आज पिच पर सीम और अतिरिक्त बाउंस थी जीत के बावजूद भी कप्तान डुप्लेसिस ने कहा कि टीम इस मैच को और भी बेहतर तरीके से खत्म कर सकती थी जिस तरह ने उनके गेंदबाजों ने कोलकाता को 128 के स्कोर पर आउट किया था। उन्होंने कहा दो-तीन दिन पहले 200 का स्कोर था और अब 130, हम कोशिश करेंगे कि और भी बेहतर करें। रन कभी भी समस्या नहीं रहेगी जरुरत है तो विकेट बचाकर रखने की। डीके धौनी की तरह शांत रहते हैं। हम टीम में मदद के लिए एक दूसरे के ऊपर निर्भर करते हैं। हमारे पास एक बेहतरीन कैंप है और टीम का माहौल अच्छा है। सभी सपोर्टिव हैं और नए-नए आइडिया लेकर मेरे पास आते हैं विराट कोहली के कप्तानी छोड़ने के बाद डु प्लेसिस पहली बार आइपीएल में किसी टीम की कप्तानी कर रहे हैं और कप्तान के तौर पर ये उनकी पहली जीत है।

पावरप्ले में सबसे कम स्कोर बनाने का शर्मनाक रिकार्ड हैदराबाद ने अपने नाम किया

नई दिल्ली। आइपीएल 2022 के पांचवें लीग मैच में राजस्थान के

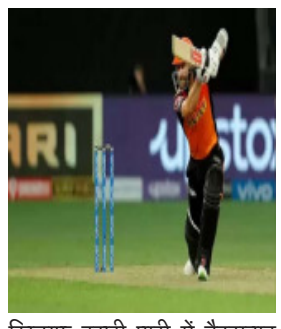

खिलाफ दूसरी पारी में हैदराबाद की शुरुआत काफी खराब रही। इस मैच में राजस्थान की टीम ने बेहतरीन बल्लेबाजी के दम पर 20 ओवर में 6 विकेट पर 210 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया। हैदराबाद को जीत के लिए 211 रन का लक्ष्य मिला था, लेकिन टीम के बल्लेबाजों ने बेहद निराश किया। इस टीम ने पावरप्ले यानी पहले छह ओवर में 14 रन पर अपने 3 विकेट गंवा दिए। पावरप्ले में हैदराबाद के इस प्रदर्शन के बाद ये टीम आइपीएल इतिहास में अब तक पावरप्ले में सबसे खराब प्रदर्शन करने वाली टीम बन गई। आइपीएल 2022 में राजस्थान के खिलाफ हैदराबाद ने पावरप्ले में 14 रन पर तीन विकेट गंवा दिए और ये इस लीग के इतिहास में पावरप्ले में सबसे खराब प्रदर्शन रहा। इससे पहले आइपीएल में पावरप्ले में सबसे खराब प्रदर्शन करने का रिकार्ड राजस्थान रायल्स के नाम पर दर्ज था। राजस्थान की टीम ने साल 2009 में आरसीबी के खिलाफ पावरप्ले में 14 रन पर दो विकेट गंवा दिए थे, लेकिन अब हैदराबाद ने राजस्थान को पीछे छोड़ दिया और पहले नंबर पर आ गया। हैदराबाद ने राजस्थान के खिलाफ इस मैच में अपने पहले तीन विकेट सिर्फ 9 रन पर ही गंवा दिए थे। हालांकि पावरप्ले खत्म होने तक इस टीम का स्कोर 14 रन तक पहुंच गया। पावरप्ले में जो तीन बल्लेबाज आउट हुए थे उसमें कप्तान केन विलियमसन ने 2 रन बनाए थे ।

कोलकाता के खिलाफ चला आरसीबी का 'तुरुप का इक्का' दो गेंदबाजों ने चटकाए 7 विकेट

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के 15वें सीजन में मौजूदा चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स को मात देकर धमाकेदार जीत हासिल करने वाली

कोलकाता की बल्लेबाजी बैंगलोर के खिलाफ पस्त हो गई। इस मैच में टास हारकर बल्लेबाजी करने को मजबूर हुई कोलकाता की पूरी टीम महज 128 रन पर ढेर हो गई। आरसीबी के स्पिनर वनिंदु हसरंगा और युवा आकाश दीप ने मिलकर 7 विकेट चटकाए। पहले मैच में 205 रन का विशाल स्कोर खड़ा करने के बाद भी हार का सामना करने वाली बैंगलोर की टीम ने दूसरे मुकाबले में जोरदार वापसी की। कप्तान फाफ डु प्लेसिस ने टास जीतकर पहले गेंदबाजी चुना और फिर मैच में जैसे गेंदबाजों ने पकड़ बनाई उससे कोलकाता की टीम के बल्लेबाज छूट नहीं पाए। 10 में से 7 विकेट दो गेंदबाजों ने मिलकर निकाले। केकेआर के बड़े और विस्फोट बल्लेबाज भी घुटने टेक दिए। वनिंदु हसरंगा को इस सीजन की शुरुआत से पहले हुए मेगा आक्शन में आरसीबी की टीम ने 10.75 करोड़ की उंची बोली लगाकर टीम के साथ दोबारा जोड़ा। पिछले सीजन में भी हसरंगा टीम का हिस्सा थे लेकिन उनको ज्यादा मैच खेलने को नहीं मिले इसके बाद टीम ने उनको रिलीज कर दिया था। केकेआर के खिलाफ बुधवार को खेले गए मुकाबले में 4 ओवर की गेंदाबाजी कर इस स्पिनर ने 20 रन दिए और चार अहम विकेट चटकाए। कप्तान श्रेयस अय्यर, सुनील नरेन, शेल्डन जैक्शन और टिम साउदी को आउट किया। 25 साल के आकाश ने टीम के लिए बेहतरीन गेंदबाजी करते हुए अहम विकेट चटकाए।

इन खिलाडियों पर होगी चेन्नई को जीत दिलाने की जिम्मेदारी, प्लेइंग इलेवन में मोइन अली की वापसी

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के ओपनिंग मैच में चेन्नई को पिछले साल की उपविजेता टीम से हार का सामना करना पड़ा था। उस मैच में पिछले साल के आरेंज कैप होल्डर रुतुराज गायकवाड़ की

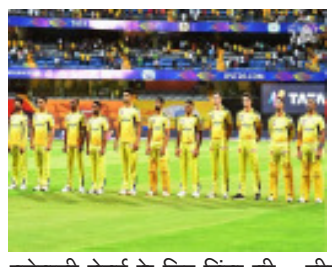

बल्लेबाजी चेन्नई के लिए चिंता की बात रही थी। हालांकि 2 साल बाद धौनी की अर्धशतकीय पारी ने टीम की उम्मीदों को नया पंख जरूर दिया था। मैच में चेन्नई की टीम बड़ी मुश्किल से 131 रनों का लक्ष्य हासिल कर पाई थी। धौनी के अलावा चेन्नई की तरफ से कोई भी बल्लेबाज अपना दम नही दिखा पाया था। इस मैच में सीएसके के लिए अच्छी बात ये है कि मोइन अली उपलब्ध होंगे। उनके आने से न केवल सीएसके को एक अतिरिक्त गेंदबाजी विकल्प मिलेगा बल्कि बल्लेबाजी क्रम में भी गहराई देखने को मिलेगी सीएसके की ओपनिंग जोड़ी- रुतुराज गायकवाड़ के साथ न्यूजीलैंड के बाएं हाथ के बल्लेबाज डेवान कान्वे सीएसके के लिए पारी की शुरुआत कर सकते हैं। पहले मैच में दोनों कुछ खास नहीं कर पाए थे। गायकवाड़ खाता भी नहीं खोल पाए थे जबकि कान्वे केवल 3 रन बना पाए थे। इन दोनों पर सीएसको को एक अच्छी शुरुआत देने की जिम्मेदारी होगी। मध्यक्रम में सीएसके- मध्यक्रम में सीएसके की बात करें तो राबिन उथप्पा, अबाती रायडू, रवींद्र जडेजा और शिवम दूबे के रूप में टीम के पास अच्छे विकल्प मौजूद हैं। पिछले मैच में धौनी की बल्लेबाजी ने टीम के लिए नई ऊर्जा का काम किया था। इसके अलावा मोइन अली के आने से टीम की बल्लेबाजी में गहराई आएगी। गेंदबाजी में सीएसके- एडम मिलने, तुषार देशपांडे और ड्वेन ब्रावो के रूप में टीम के पास तेज गेंदबाजी का विकल्प है। पिछले मैच में ब्रावो का जादू चला था और उन्होंने 20 रन देकर 3 विकेट हासिल किए थे। मोइन अली के आने से उनके और जडेजा के रूप में टीम के पास स्पिन गेंदबाजी का बेहतरीन विकल्प है। चेन्नई की संभावित प्लेइंग इलेवन- रुतुराज गायकवाड़, डेवान कान्वे, राबिन उथप्पा, अंबाती रायडू, रवींद्र जडेजा, शिवम दूबे, एमएस धौनी(विकेटकीपर), ड्वेन ब्रावो, मोइन अली, एडम मिलने और तुषार देशपांडे।

बैंगलोर की जीत के बाद अंक तालिका में हुआ बदलाव, टाप पर है विस्फोटक कप्तान की टीम

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के 15वें सीजन में अब सभी टीमें एक एक मैच खेल चुकी है। अंक तालिका में अब टीम के फैंस की दिलचस्पी बढ़ रही है क्योंकि इस बार मुकाबला 8 नहीं बल्कि 10 टीमों के बीच है। बुधवार को बैंगलोर और कोलकाता की टीमों के बीच एक बेहद रोमांचक मैच खेला गया। इस मैच के बाद अंक तालिका में बदलाव हुए। बैंगलोर ने शानदार गेंदबाजी के दम पर कोलकाता को टूर्नामेंट के छठे मुकाबले में महज 128 रन के स्कोर पर रोका। लक्ष्य आसान दिख रहा था लेकिन कोलकाता के गेंदबाजों ने इसे मुश्किल बना दिया। 19.2 ओवर में टीम ने 7 विकेट गंवाकर जीत का लक्ष्य हासिल किया। इस जीत के बाद टीम को दो मैच के बाद पहला अंक मिला और वह अंक तालिका में छठे स्थान पर पहुंच गई। इस वक्त अंक तालिका में पहले

स्थान पर विस्फोटक बल्लेबाज संजू सैमसन की कप्तानी वाली टीम राजस्थान रायल्स है। पहले मुकाबले में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ टीम ने 210 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया था और 61 रन से जीत हासिल करने में कामयाबी पाई थी। इस जीत की वजह से टीम का नेट रन रेट बहुत ही शानदार हो गया और वह एक जीत हासिल करने वाली बाकी टीमों से उपर पहुंच गई। दूसरे नंबर पर दिल्ली की टीम है जिसकी कप्तानी भी एक विस्फोटक बल्लेबाज रिषभ पंत करते हैं। टीम ने अपने पहले मैच में पांच बार की चैंपियन मुंबई की टीम को हराया था। तीसरे स्थान पर पंजाब की टीम है जिसने बैंगलोर के खिलाफ पहले मैच में 205 रन के बड़े लक्ष्य का पीछा बड़े आराम से हासिल किया था। चौथा स्थान हार्दिक पांड्या की कप्तानी वाली गुजरात टाइटंस है जिसने पहले मैच में लखनऊ के खिलाफ जीत हासिल की थी। छठे स्थान पर बैंगलोर की टीम है, इसके बाद की 4 टीमों को पहले मैच में हार मिली थी। सातवें नंबर पर लखनऊ है तो आठवां स्थान पर चेनर्ई है इसके बाद नौवें नंबर पर मुंबई और आखिरी पायदान पर हैदराबाद की टीम है।

चेन्नई के खिलाफ इन पर होगी लखनऊ को जीत दिलाने की जिम्मेदारी ओपनिंग जोड़ी पर होगी नजर

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के 7वें मैच में पहली बार आइपीएल खेल रही लखनऊ की टीम चेनर्ई के खिलाफ जीत के इरादे से उतरेगी। टीम के पास केएल राहुल

और क्विंटन डी काक के रूप में सबसे खतरनाक ओपनिंग जोड़ी मौजूद है। हालांकि पहले मैच ये जोड़ी कुछ खास नहीं कर पाई और इसी का खामियाजा टीम को भुगतना पड़ा। दोनों पहले मैच में 13 रन के स्कोर पर वापस पवेलियन चले गए थे। इसलिए इस मैच में दोनों के ऊपर टीम को अच्छी शुरुआत दिलाने की जिम्मेदारी होगी। हालांकि पहले मैच में दीपक हुड्डा और आयुष बदोनी की बल्लेबाजी जरूर टीम को ऊर्जा देगी। बदोनी और हुड्डा ने पहले मैच में शानदार अर्धशतकीय पारी खेली थी। मैच के बाद कप्तान राहुल ने उन्हें टीम का ठबेबी एबीठ बताया था लखनऊ की ओपनिंग जोड़ी- लखनऊ की ओपनिंग जोड़ी बाकी टीमों की तुलना में सबसे खतरनाक है जो किसी भी गेंदबाजी लाइनअप को परेशान कर सकते हैं। दोनों पर टीम को अच्छी शुरुआत दिलाने की जिम्मेदारी होगी। राहुल पिछले कुछ सीजन से लगातार अच्छी लय में दिख रहे है। टीम की बल्लेबाजी बहुत हद तक उन पर निर्भर करती है। मध्यक्रम में लखनऊ- टीम का मध्यक्रम काफी मजबूत है जो पिछले मैच में दिखा भी था जब टीम 29 रन के स्कोर पर 4 विकेट गंवा चुकी थी तो आयुष और दीपक ने टीम को 158 तक के सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया था। इन दोनों के अलावा इविन लुइस, मनीष पांडे और क्रुणाल पांड्या के रूप में अच्छा विकल्प मौजूद है। गेंदबाजी में लखनऊ- गेंदबाजी में लखनऊ की टीम के पास दुष्मंथा चमीरा के रूप में अनुभवी गेंदबाज मौजूद है। इसके अवाला टीम के पास रवि बिशनेई, मोहसिन खान और आवेश खान के रूप में युवा प्रतिभाशाली गेंदबाज मौजूद हैं। लखनऊ की संभावित प्लेइंग इलेवन- केएल राहुल(कप्तान), क्विंटन डी काक(विकेटकीपर), इविन लुइस, मनीष पांडे, दीपक हुड्डा, क्रुणाल पांड्या, मोहसिन खान, आयुष बदोनी, दुष्मंथा चमीरा, रवि बिशनेई और आवेश खान।

पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया के बीच निर्णायक मुकाबला, जानिए कब और कहां देखें मुकाबला

नई दिल्ली। पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट सीरीज में जीत हासिल करने के बाद अब आस्ट्रेलिया का इरादा वनडे में मेजबान को मात देने का है। तीन मैचों की सीरीज का पहला मुकाबला 88 रन के बड़े अंतर

से जीतकर 1-0 की बढ़त बना चुकी आस्ट्रेलिया की टीम पाकिस्तान के खिलाफ दूसरा वनडे अपने नाम कर सीरीज पर कब्जा जमाना चाहेगी। वहीं अपने घर खेल रही पाकिस्तान बेहतर खेल दिखाकर सीरीज में बराबरी करने की कोशिश में होगी। पहले वनडे में आस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान के गेंदबाजों की बखिया उधेड़ते हुए 313 रन का स्कोर खड़ा किया था। ट्रेविस हेड ने शानदार शतक जमाया था जबकि मैकडरमोट ने अर्धशतक जमाया था और कैमरून ग्रीन ने तेज 40 रन की पारी खेली थी। पाकिस्तान के ओपनर इमाम उल हक ने शतक जमाया था और कप्तान बाबर ने अर्धशतकीय पारी खेली लेकिन वह टीम को हार से नहीं बचा पाए। दूसरे मैच से पहले जान लेते हैं इससे जुड़ी तमाम बातें। कब खेला जाएगा पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया के बीच सीरीज का दूसरा वनडे मुकाबला 31 मार्च, गुरुवार को खेला जाएगा पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया के बीच सीरीज का दूसरा मुकाबला कहां खेला जाएगा पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया के बीच सीरीज का दूसरा वनडे मुकाबला लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में खेला जाना है।कितने बजे खेला जाएगा पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया के बीच सीरीज का दूसरा वनडे मुकाबला दोपहर 3.30 बजे खेला जाएगा पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया के बीच सीरीज का दूसरा वनडे मुकाबला। कितने बजे होगा पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया के बीच सीरीज के दूसरे वनडे मुकाबले का टास मैच से आधा घंटे पहले दोपहर 3 बजे होगा पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया के बीच सीरीज के दूसरे वनडे मुकाबले का टास।पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया के बीच सीरीज के दूसरे वनडे मुकाबले सोनी नेटवर्क के सोनी सिक्स और सोनी सिक्स एचडी पर लाइव देखा जा सकता है। इसके अलावा दैनिक जागरण की वेबसाइट पर इस सीरीज से जुड़ी सारी खबरों को पढ़ा जा सकता है।

राशिफल

मेष-:स्वास्थ्य संबंधी समस्या निकट है, इसलिए नियमित व्यायाम को दिनचर्या में शामिल करें और विश्वास करें कि इलाज से पहले सावधानी बरतना बेहतर है

वृष-:आज का दिन आपके लिए मंगलमय रहेगा। आज आपके रचनात्मक कार्यों में नाम होगा और आपको प्रसिद्धि भी मिलेगी। आज आप अपने मन के अनुसार निर्णय लेंगे।

मिथुन-:आज का दिन भावनात्मक रहेगा. आप खुद को अपनी अंतरतम भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने की स्थिति में भी पा सकते हैं। घरेलू काम थकाने वाले होंगे।

कर्क-:जीवनसाथी का प्यारा व्यवहार आपका दिन खुशनुमा बना सकता है. आज अपने ख़र्चों पर नियंत्रण रखें से ख़र्च करने से बचें। भावनात्मक रूप से जोखिम उठाना आपके पक्ष में जाएगा।

सिंह-:आज आप जिस काम को पूरा करना चाहते है वह आसानी से पूरा हो जाएगा. किसी महत्वपूर्ण कार्य के पूर्ण होने पर बधाई देने के लिए लोगों का आना-जाना रहेगा।

कन्या-:आज आप सभी परेशानियों और चिंताओं को पीछे छोड़कर अपने परिवार के साथ कुछ समय बिताना चाहेंगे. आज आपका जाता हुआ दिखाई देगा जिसके बारे में आपने सोचा भी नहीं होगा।

तुला-:किसी मित्र की उदासीनता आपको परेशान करेगी. लेकिन अपने आप को शांत रखें। इसे समस्या न बनने दें और इससे बचने की कोशिश करें।

वृश्चिक-:आज भाग्य आपका पूरा साथ देगा। जिन चीजों के लिए आप लंबे समय से प्रयास कर रहे थे, आज वो पूरी होने वाली हैं। जो प्रयास आपने अपनी ओर से व्यर्थ समझे थे।

धनु-:आज भौतिक सुख-सुविधाओं की ओर रुझान बढ़ेगा. जीवनसाथी के साथ वैचारिक मतभेद रहेंगे। आत्मबल में वृद्धि होगी। पारिवारिक समस्याओं से आज विचलित हो सकता है।

मकर-:खुद पर हद से ज्यादा दबाव न डालें और पर्याप्त आराम करें. रियल एस्टेट से जुड़े निवेश आपको अच्छा मुनाफा देंगे। आपका अडियल रवैया घर में लोगों का दिल दुखा सकता है।

कुंभ-:आज आपका झुकाव अध्यात्म की ओर रहेगा, मंदिर जाने या कोई धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बना सकते हैं. आज आपको खुशी पाने के लिए अपने स्वभाव में थोड़ा लाने की जरूरत है

मीन-:आज आपको कार्यक्षेत्र में सुख-समृद्धि की प्राप्ति होगी. परिवार और जीवन साथी का सहयोग मिलने की संभावना है। हालांकि छात्रों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए थोड़ी अधिक मेहनत करनी पड़

सम्पादकीय

नरेन्द्र मोदी को हराने का गणित लेकर तो बहुत से लोग घूम रहे हैं, लेकिन किसी के पास जीत का रसायनशास्त्र नहीं है

देश के बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग लंबे अर्से से यह गुत्थी नहीं सुलझा पा रहा है कि मोदी हारते क्यों नहीं मतलब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को हराया कैसे जाए फिलहाल उन्होंने इस समस्या के हल के लिए कुछ कथित विशेषज्ञों को भी जोड़ लिया है। सब मिलकर अभियान में जुट गए हैं। निराशा धीरे-धीरे हताशा में बदल रही है, पर अब इसका जिम्मा लाल बुझक्कड़ों ने भी ले लिया है। वे कह रहे हैं कि नरेन्द्र मोदी को हराया जा सकता है। तो भाई हराओ न। खुद को चुनावी रणनीतिकार बताने वाले प्रशांत किशोर ने मुनादी कर दी है कि मोदी को हराया जा सकता है। सारे गैर-भाजपा दलों के नेता पूछ रहे हैं, जल्दी बताओ कैसे, क्योंकि उन्हें तो कोई रास्ता सूझ नहीं रहा। प्रशांत किशोर ने कोई सुरंग खोद ली है क्या इसे कहते हैं परस्पर लाभ का संबंध। इस एक वाक्य से प्रशांत किशोर को अगले दो साल के लिए काम मिल जाएगा और नरेन्द्र मोदी विरोधी नेताओं को उम्मीद। कहते ही हैं कि उम्मीद पर दुनिया कायम है। इस समय विरोधी दलों की दुनिया प्रशांत किशोर के भरोसे पर टिकी है। उन्हें लग रहा है कि जिस तरह भगवान कृष्ण ने अपनी तर्जनी पर गोवर्धन पर्वत उठाकर गोकुलवासियों की रक्षा की थी, उसी तरह प्रशांत किशोर उन्हें सत्ता के सिंहासन तक पहुंचा सकते हैं। अब देखना यह है कि इसका बिल कौन भरता है राजनीति या जीवन के किसी क्षेत्र में कोई अजर-अमर नहीं होता, पर किसी के चाहने से तो कोई खत्म नहीं होता। आजादी के बाद से पहले जनसंघ और फिर भाजपा के खिलाफ उसके राजनीतिक विरोधियों के पास एक रेडीमेड फार्मूला था। जब भी भाजपा बढ़ती हुई दिखाई देती थी, 'सेक्युलरिज्म खतरे में है' का नारा लगाकर सब एक हो जाते थे। पिछले आठ साल में इस नारे का हश्र 'भेडिया आया-भेडिया आया' वाला हो गया है। लोग समझ गए हैं कि कोई भेडिया है ही नहीं, तो वह आएगा कहां से उन्हें समझ आ गया है कि यह भेडिया तो दरअसल सेक्युलरिज्म ही था, जो भेड़ की शक्ल में घूम रहा था। उसने इस देश की सनातन संस्कृति को हजम करने का प्रयास किया। अपने इस प्रयास में वह सफल भी हो जाता, यदि नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री न बनते। इसलिए मोदी के प्रधानमंत्री बनने को जो लोग केवल भाजपा के सत्ता में आने के रूप में देखते हैं, वे इस परिवर्तन के गूढ़ अर्थ को समझने में विफल रहे हैं। किसी पार्टी का सत्ता में आना या न आना एक सामान्य घटना है, पर मोदी का प्रधानमंत्री बनना एक दीर्घकालिक प्रभाव वाली परिघटना है, जो देश को उसके पुराने सांस्कृतिक वैभव की ओर ले जा रही है। क्या यह सामान्य बात है कि दशकों से जिस सेक्युलरिज्म को पाल-पोसकर रखा गया, सिर्फ आठ साल में उसका कोई नामलेवा नहीं रह गया। पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में किसी को सेक्युलरिज्म की बात करते हुए किसी ने सुना क्या राजनीति या जीवन के किसी क्षेत्र में कोई अजर-अमर नहीं होता, पर किसी के चाहने से तो कोई खत्म नहीं होता। आजादी के बाद से पहले जनसंघ और फिर भाजपा के खिलाफ उसके राजनीतिक विरोधियों के पास एक रेडीमेड फार्मूला था। जब भी भाजपा बढ़ती हुई दिखाई देती थी, 'सेक्युलरिज्म खतरे में है' का नारा लगाकर सब एक हो जाते थे। पिछले आठ साल में इस नारे का हश्र 'भेडिया आया-भेडिया आया' वाला हो गया है। लोग समझ गए हैं कि कोई भेडिया है ही नहीं, तो वह आएगा कहां से उन्हें समझ आ गया है कि यह भेडिया तो दरअसल सेक्युलरिज्म ही था, जो भेड़ की शक्ल में घूम रहा था। उसने इस देश की सनातन संस्कृति को हजम करने का प्रयास किया। अपने इस प्रयास में वह सफल भी हो जाता, यदि नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री न बनते। इसलिए मोदी के प्रधानमंत्री बनने को जो लोग केवल भाजपा के सत्ता में आने के रूप में देखते हैं, वे इस परिवर्तन के गूढ़ अर्थ को समझने में विफल रहे हैं। परिघटना है, जो देश को उसके पुराने सांस्कृतिक वैभव की ओर ले जा रही है। क्या यह सामान्य बात है कि दशकों से जिस सेक्युलरिज्म को पाल-पोसकर रखा गया, सिर्फ आठ साल में उसका कोई नामलेवा नहीं रह गया। पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में किसी को सेक्युलरिज्म की बात करते हुए किसी ने सुना क्या राजनीति या जीवन के किसी क्षेत्र में कोई अजर-अमर नहीं होता, पर किसी के चाहने से तो कोई खत्म नहीं होता।

कैसे पार लगेगी श्रीलंका की नैय चीनी कर्ज की कड़वी चाशनी

ताकतवर पड़ोसी अगर सिरदर्द होता है तो कमजोर पड़ोसी गले में पड़ी जिम्मेदारी। जब बात देशों की हो तो मामला सिर्फ उनकी सरकारों तक सीमित नहीं रह जाता। उसका असर जनता तक पहुंचता है। शक्तिशाली पड़ोसी मुल्क से खराब संबंधों का अर्थ है जंग के खतरे की आशंका में आम लोगों का जीना मुहाल हो जाना। जबकि राजनीतिक और आर्थिक कारणों से लाचारी डोलते पड़ोसी एक अलग किस्म की मुसीबत और दुविधा सामने लाते हैं। भारत के लिए इसे संयोग कहें या दुर्योग कि वह दोनों तरह के पड़ोसियों से घिरा हुआ है। एक तरफ चीन-पाकिस्तान जैसे बुरी नीयत वाले मुल्क हैं, जो सरहद पर कोई न कोई समस्या खड़ी किए रहते हैं। तो दूसरी तरह नेपाल-बांग्लादेश जैसे कमजोर अर्थव्यवस्था वाले देश हैं, जो हमेशा मदद के तलबगार रहते हैं। तमाम राजनीतिक और सामाजिक कारणों से ढेरों उठापटक डोलते रहने के बाद एक अन्य पड़ोसी श्रीलंका हाल के दशक में स्थिरता की तरफ बढ़ता प्रतीत हो रहा था, लेकिन बीते कुछ वर्षों में वहां जो राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में नीतिगत बदलाव किए गए, उनके चलते वह एक समस्याग्रस्त पड़ोसी के रूप में सामने आ गया है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अगर भारत ने श्रीलंका की बड़े पैमाने पर मदद न की तो आर्थिक तौर पर वह देश बर्बाद हो जाएगा। निश्चित ही भारत सरकार अपने एकदम पड़ोस में बसे इस द्वीपीय देश को इस तरह तबाह होते नहीं देखना चाहेगी। जहां तक मुमकिन होगा, वह श्रीलंका की मदद करेगी, लेकिन सवाल है कि आखिर श्रीलंका की दुर्गति क्यों हुई और क्या अब कोई रास्ता ऐसा बचा है, जहां से श्रीलंका को खुशहाली की ओर लौटाया जा सके श्रीलंका की लंका क्यों लगी : बीते कुछ दशकों में श्रीलंकाई नागरिकों ने शायद इससे पहले इतना बुरा दौर न देखा हो, जब उन्हें रोजमर्रा की चीजों के लिए घंटों लाइन में लगना पड़ा हो। समस्या लाइन में लगने की ही नहीं, बल्कि दूध, दवाओं, ईंधन जैसे बेहद आवश्यक वस्तुओं के अभाव और उनकी आसमान छूती कीमतों की भी है। लोगों का घरों में बैठना भी मुहाल है, क्योंकि वहां उन्हें घंटों तक कटी बिजली के वापस आने का इंतजार करना होता है। आर्थिक संकट कैसा है-यह अहसास इससे होता है कि श्रीलंकाई सरकार ने स्वाभाविक पड़ोसी भारत और उस चीन तक से मदद की गुहार लगाई है, जो कर्ज के बदले उसकी तमाम परियोजनाओं की लीलने की योजना बनाए बैठा है। ऊपरी तौर पर लगता है कि कोरोना ने मुख्यतः पर्यटन पर केंद्रित श्रीलंकाई अर्थव्यवस्था का कचूमर निकाल दिया। पर्यटक नहीं आए तो देश में विदेशी मुद्रा का अकाल पड़ गया। इससे आयात ठप हो गया। रोजमर्रा के जरूरी सामान की कीमत नहीं चुका पाने की श्रीलंकाई सरकार की मजबूरी इस रूप में सामने आई कि पूरे देश में दवाइयों, पेट्रोल-डीजल, दूध और रसोई गैस की किल्लत हो गई। ईंधन की आपूर्ति का असर बिजलीघरों पर भी पड़ा है। इस कारण कारखानों और घरों की बिजली आपूर्ति में भारी कटौती करनी पड़ रही है। उधर राशन की चीजों में दूध, चावल-चीनी आदि के भाव ऐसे हैं कि पांव के नीचे से जमीन निकल जाए। चावल-चीनी 300 रुपये प्रति किलोग्राम और दूध 1,600 रुपये प्रति किलोग्राम पहले ही हो चुके हैं। गारंटी नहीं कि ये भाव यहीं टिके रहेंगे। हालात ये हैं कि इनके यहां से भी कई गुना ज्यादा हो जाने की आशंकाएं हैं। जरूरी चीजों की किल्लत ऐसी है कि घंटों लाइन में खड़े होने पर भी सामान मयस्सर नहीं हो रहे। हाल में लाइन में लगे तीन बुजुर्गों की मौत ने काफी सुर्खियां बटोरीं, लेकिन कोई चारा न देखकर नागरिकों ने भारत की तरफ कूच करना शुरू कर दिया। इससे भारत में शरणार्थियों की संख्या और इनकी समस्या में इजाफे के साफ संकेत मिलते हैं। दावा किया जा रहा है कि पूरे जीवन की अपनी जमापूंजी बटोरकर तस्करों के हवाले कर रहे हैं, ताकि वे किसी तरह उन्हें भारत पहुंचा दें। आर्गेनिक खेती बनी गले की फांस : श्रीलंका के मौजूदा संकट के पीछे जिन कारणों को गिनाया जा रहा है, उनमें विदेशी कर्ज से लेकर आर्गेनिक खेती पर जोर देने की हालिया नीतियों का मुख्य योगदान हो सकता है। विदेशी कर्ज रिकार्ड ऊंचाई पर होने के साथ श्रीलंका का विदेशी मुद्रा भंडार पाताल में पहुंच चुका है। नतीजे में श्रीलंकाई मुद्रा के पतन ने हालात ऐसे बनाए हैं कि बाहर से पेट्रोल-डीजल और खाने-पीने की चीजें खरीदना मुश्किल हो गया है। इससे निपटने के लिए श्रीलंका सरकार ने देश में आर्थिक आपातकाल घोषित कर दिया है, लेकिन जनता किसी आर्थिक मुसीबत को तब महसूस करती है, जब रोजमर्रा की जरूरतों के सामानों की या तो भीषण किल्लत हो जाए या फिर उनकी कीमतें आसमान छूने लगें। श्रीलंका में ये दोनों स्थितियां एक साथ पैदा हुईं। इनके लिए सिर्फ एक कारण सबसे अहम माना गया। असल में पिछले वर्ष श्रीलंका की सरकार ने एक नीतिगत फैसला लेते हुए खेती में रासायनिक खादों के इस्तेमाल को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया। इसके स्थान पर देश में आर्गेनिक खेती करने का आह्वान किया गया। पर्यावरण और इंसानी सेहत के नजरिये से यह फैसला सराहनीय है, लेकिन इसमें दूरदर्शिता का साफ अभाव था। इस तब्दीली को चरणबद्ध तरीके से और वैकल्पिक समाधान देते हुए लागू करने के बजाय एक झटके में खेती का स्वरूप बदलने की नीति के चलते श्रीलंका के कृषि क्षेत्र का उत्पादन आधा रह गया। ऐसे में नागरिकों को दूध, चीनी, चावल तक के लाले पड़ गए। चीनी कर्ज की कड़वी चाशनी : वैसे तो कोरोना काल में पर्यटकों का आना-जाना ठप हो जाने से कई दूसरे देशों की हालत भी खस्ता है, लेकिन उन पर न तो श्रीलंका की तरह भारी-भरकम चीनी कर्ज लदा हुआ है और न ही विदेशी मुद्रा का उनका भंडार पूरी तरह खाली हुआ है, पर श्रीलंका के अंदरूनी हालात और उसकी डगमगाती करेंसी ने उन देशों की सरकारों को भी आशंकित कर दिया है, जहां से थोड़े-बहुत पर्यटक इस द्वीपीय देश की सैर को आते रहे हैं। हाल में कनाडाई सरकार ने एडवाइजरी जारी कर अपने नागरिकों को श्रीलंका की यात्रा से परहेज बरतने को कहा है, लेकिन इस प्रसंग में जो सबसे अहम चिंता श्रीलंका के हर मोर्चे पर नाकाम होने के मुख्य कारण के रूप में सामने आई है, वह श्रीलंका में चीनी कर्ज से चलाई जाने वाली परियोजनाएं हैं। श्रीलंका पर वैसे तो अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) और भारत-जापान आदि से करीब 35 अरब डालर का कर्ज चढ़ा हुआ है, लेकिन इसमें ज्यादा दोष चीनी कर्ज का माना जाता है जिसने श्रीलंका के हाथों के तोते उड़ा दिए हैं। अकेले चीन का श्रीलंका पर पांच अरब डालर से ज्यादा का कर्ज है। यह कर्ज वहां विभिन्न परियोजनाओं के निर्माण और संचालन के लिए चीन से लिया गया, लेकिन समस्या यह है कि कर्ज लेकर घी पीने की इस सोच के चलते यह ऋण गले की फांस बन गई है। ऐसा इसलिए हुआ कि चीन ने विस्तारवादी नीतियों के तहत श्रीलंका के रास्ते भारत को घेरने के लिए जिन परियोजनाओं का निर्माण किया है, उनसे श्रीलंका को कोई कमाई नहीं हो रही है। ऐसे में श्रीलंका का विदेशी मुद्रा भंडार खत्म होने के कगार पर पहुंच गया है। हालत यह है कि उसे वर्ष 2022 में सात अरब डालर का विदेशी कर्ज चुकता करना है, लेकिन विदेशी मुद्रा के उसके खजाने में करीब 1.5 अरब डालर ही बचे हैं, लेकिन ध्यान रहे कि श्रीलंका के इस पतन के पीछे राजनीतिक दूरदर्शिता का अभाव हैं। लगभग दो साल पहले बिखरे विपक्ष का फायदा उठाकर सिंहली राष्ट्रवाद और बेहतर भविष्य के आह्वान के साथ सत्ता पर काबिज हुए राजपक्षे परिवार ने देश की जनता को तरक्की के कई सब्जबाग दिखाए, लेकिन उन पर अमल की किसी ठोस योजना को यह परिवार पेश नहीं कर सका। हालांकि पिछले दो वर्षों में चीनी परियोजनाओं से बाहर निकलने की कोशिशें यह समझते हुए की गई कि अंततः ये देश को खोखला कर देंगी, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। अब देखना यह है कि भारत की ओर से समय-समय पर मिलने वाली मदद के बल पर श्रीलंका किस ऊंचाई तक जा सकता है। हालांकि अगर उसने एक बार फिर चीन की गोद में जा बैठने की गलती की तो तबाही के रास्ते से उसे वापस ला पाना आसान नहीं होगा। भारत भी श्रीलंका की एक हद तक ही मदद कर सकता है। इस साल भारत उसे 2.4 अरब डालर की मदद दे चुका है, यह सहायता अनंतकाल तक जारी नहीं रह सकती। भारत श्रीलंका की माली हालत सुधारने के लिए अपना पूरा खजाना खाली नहीं कर सकता। ऐसे में अपने राजनीतिक संघर्ष से उबरने, कोरोना के बाद अब खुल रहे माहौल में पर्यटन को बढ़ावा देने और चीन की दखलंदाजियां कम करने के साथ उसे स्वावलंबन की दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है। श्रीलंका का अस्थिर हो जाना भारत को किस तरह प्रभावित कर सकता है- शरणार्थियों की आमद इसका एक स्पष्ट उदाहरण है। आर्थिक आपातकाल लगाए जाने के बाद से खाने-पीने की चीजों की किल्लत और महंगाई सिर पर पहुंचने के कारण आम श्रीलंकाइयों के सामने जिंदगी बचाने का संकट है। ऐसे में उन्हें जो सबसे बेहतर उपाय लगता है, वह भारत में शरण लेना ही है। वैसे तो दुनिया भर में कई देशों-अर्थव्यवस्थाओं के डगमगाने से लाखों लोगों ने हाल के वर्षों में पलायन किया है और दूसरे देशों में जाकर शरण मांगी है, पर एक आबादी बहुल देश के रूप में भारत के पास पड़ोसी देश के नागरिकों को शरण देते रहने के बहुत सीमित विकल्प हैं। श्रीलंका से आने वाले लोगों में से ज्यादातर के पास पासपोर्ट जैसी जरूरी चीज भी नहीं है। ऐसे में इन्हें अवैध प्रवासी माना जा सकता है। मानवीय आधार पर इन्हें कुछ समय तक रहने की छूट भी दी जा सकती है, लेकिन आखिरकार इन्हें श्रीलंका ही लौटाना होगा। हम अपने रोजगारों और अन्य संसाधनों पर शरणार्थियों के रूप में ज्यादा भार वहन करने की स्थिति में नहीं है। एक समस्याग्रस्त देश से आ रहे शरणार्थी खुद हमारे लिए समस्या उत्पन्न कर सकते हैं। आर्थिक मदद करना ठीक है, लेकिन एक डूबती नाव को बचाने के लिए अपने जहाज को ही डुबो देना समझदारी तो नहीं होगी।

श्रीलंका को दिवालिया बनाने में चीन की कर्ज नीति कितनी जिम्मेदार क्या है एक्सपर्ट की राय

भारत का पड़ोसी मुल्क श्रीलंका जबरदस्त आर्थिक संकट से गुजर रहा है। देश में महंगाई को लेकर जनता सड़कों पर है। महंगाई के चलते मौजूदा श्रीलंका सरकार को आम जनता का विरोध का सामना करना पड़ रहा है। श्रीलंका सरकार का कहना है कि वह पूरी तरह से दिवालिया हो गई है। आखिर श्रीलंका को यहां तक पहुंचाने में क्या चीन की कोई भूमिका है। श्रीलंका को दिवालिया बनाने में चीन क्यों दोषी है। चीन ने अमेरिका को किस तरह से अपने कर्ज जाल में फंसाया है। क्या चीन के कर्जजाल के कारण श्रीलंका दिवालिया हो गया है। 1- प्रो हर्ष वी पंत का कहना है कि श्रीलंका सरकार ने स्वीकार किया है कि उनका देश विदेशी कर्ज में डूबा हुआ है। श्रीलंका ने अपनी अर्थव्यवस्था को ठीक करने के लिए चीन, जापान और भारत से कर्ज ले रखा है, लेकिन चीन ने कठोर शर्तों पर कर्ज दे रखा है। श्रीलंका को चीन को पांच खरब अमेरिकी डालर का कर्ज पहले ही चुकाना था। इसके बावजूद श्रीलंका को एक अरब अमेरिकी डालर का अतिरिक्त कर्ज पिछले वर्ष लेना पड़ा था। चीन ने यह कर्ज अपनी शर्तों के मुताबिक दिया है। श्रीलंका ने चीन से अपनी मुद्रा के एक्सचेंज के जरिए 1.5 खरब अमेरिकी डालर हासिल किए हैं। उससे चीन की स्थिति और खराब हो गई है। 2- उन्होंने कहा कि चीन पर यह आरोप लगते रहे हैं कि वह गरीब देशों पर कर्ज का बोझ डालकर उनको अपने कर्ज जाल में फंसा रहा है। उन्होंने कहा कि गरीब मुल्कों को कर्ज देने के तौर तरीकों के चलते ड्रैगन की काफी निंदा भी हुई है। चीन पर यह आरोप लगता रहा है कि वह कूटनीतिक दांवपेच की खातिर कर्ज जाल को अपना हथियार बना रहा है। यह भी देखा गया है कि कर्ज नहीं चुका पाने की स्थिति में वह उक्त देश की संपत्तियों पर कब्जा कर लेता है। चीन की इस नीति के समर्थन में श्रीलंका का उदाहरण आम है। 3- भारत के विरोध के बावजूद चीन ने कुछ वर्ष पहले चीनी निवेश की मदद से हम्बनटोटा बंदरगाह परियोजना की शुरुआत की थी। यह परियोजना विवादों में फंस गई। इसके चलते परियोजना पूरी नहीं हो पा रही थी। अंत में वर्ष 2017 में एक समझौते के तहत इसे चीन की सरकारी कंपनियों को 99 साल की लीज पर इस बंदरगाह की 70 फीसद की हिस्सेदारी दे दी गई, तब जाकर चीन ने इसमें दोबारा निवेश शुरू किया। यह बंदरगाह भारत के सामरिक हितों के प्रतिकूल है। इसलिए भारत श्रीलंका के इस समझौते का विरोध करता रहा है। प्रो पंत का कहना है कि श्रीलंका के साथ भारत जितना उदार हो जाए, लेकिन कोलंबो नई दिल्ली और बीजिंग के साथ रिश्तों में संतुलन बनाकर ही चलेगा। उन्होंने कहा कि श्रीलंका चीन से किनारा नहीं कर सकता है। वह किसी भी हाल में चीन के साथ अपने रिश्तों को नहीं बिगाड़ना चाहेगा, क्योंकि वह चीन और भारत को आमने सामने ही देखना पसंद करता है। इसलिए भारत को यह उम्मीद कतई नहीं करनी चाहिए कि वह चीन के मामले में भारत का साथ निभाएगा। उन्होंने कहा कि भारत अपनी नेबरहुट फस्ट पालिसी के तहत श्रीलंका को उदार दिल से मदद कर रहा है। यह भारतीय विदेश नीति खासकर मोदी सरकार की नीति है। श्रीलंका में महंगाई चरम पर है। इसकी अर्थव्यवस्था चिंताजनक बनी हुई है। आम उपभोग की लगभग सभी चीजों के दाम आसमान छू रहे हैं। श्रीलंका ने महंगाई दर में वृद्धि का कारण बताते हुए कहा है कि इसके चलते खाने का सामान हो या दूसरे अन्य सामान सब की कीमतों में भारी उछाल देखने को मिला है। ताजी मछली, सब्जियों और हरी मिर्च की कीमतों में सबसे ज?यादा उछाल देखा गया है। खाने की सामग्री के अलावा डीजल और पेट्रोल की कीमतों में वृद्धि की वजह से अन्य चीजें भी महंगी हो गई हैं। श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे देश में पहले ही आर्थिक आपातकाल की घोषणा कर चुके हैं। इसमें सेना को खाद्यानन के वितरण के लिए विशेष अधिकार भी दिए गए हैं। सेना को अधिकार दिया गया है कि वो ये सुनिश्चित करे कि सरकार ने जो खाद्यानन सामग्री के दर तय किए हैं, वो लोगों तक उसी कीमत पर पहुंचे। देश में गंभीर आर्थिक संकट के बीच दिसंबर, 2021 श्रीलंका के वित्त मंत्री बासिल राजपक्षे का भारत दौरा महतवपूर्ण माना जा रहा है। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के साथ हुई वार्ता के बाद भारत ने सहमति जताई थी कि वो खाद्य सामग्री, दवा और अन्य आवश्यक वस्तुओं के लिए श्रीलंका को लाइन आफ क्रेडिट देगा।

मां शारदा की अमर कहानी एवं कैसे हुई मां की मैहर में उत्पत्ति तीर्थ स्थल के सन्दर्भ में पौराणिक कहानियां और दन्तकथाएं

देश का धड़कन कहलाने वाले मध्यप्रदेश में सतना जिले की मैहर शहर में 600 फुट की ऊंचाई पर त्रिकुटा पहाड़ी पर मां दुर्गा के शारदीय रूप श्रद्धेय देवी माँ शारदा का मंदिर है, जो मैहर देवी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह हिन्दुओं का महत्वपूर्ण धार्मिक एवं आस्थावान स्थान है। यहां श्रद्धालुजन माता का दर्शन कर उसी तरह पहुंचते हैं जैसे जम्मू में मां वैष्णो देवी का दर्शन करने जाते हैं। मां मैहर देवी के मंदिर तक पहुंचने के लिए लगभग हजार सीढियां तय करनी पड़ती है। महा वीर आला-उदल को वरदान देने वाली मां शारदा देवी को पूरे देश में शारदा मा के नाम से जाना जाता है। यहां पर रोपवे बनने से अब श्रद्धालुओं को माता के दर्शन करने में आसानी हो गई है। इस मंदिर की उत्पत्ति के पीछे एक बहुत ही प्राचीन पौराणिक कहानी है जिसके अनुसार सम्राट दक्ष की पुत्री सती, भगवान शिव से ब्याह करना चाहती थी, परंतु राजा दक्ष शिव को भगवान नहीं, भूतों और अघोरियों का साथी मानते थे और इस विवाह के विरोधी थे, फिर भी सती ने अपने पिता की इच्छा के खिलाफ भगवान शिव से ब्याह रचा लिया। कहानी के अनुसार एक बार राजा दक्ष ने 'बृहस्पति सर्व' नामक यज्ञ रचाया, इस यज्ञ में ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र और अन्य देवी-देवताओं को भी आमंत्रित किया गया था, लेकिन जान-बूझकर उन्होंने भगवान महादेव को नहीं बुलाया। महादेव की पतने और दक्ष की पुत्री सती इससे बहुत दुखी हुईं और यज्ञ-स्थल पर सती ने अपने पिता से भगवान शिव को आमंत्रित न करने का कारण पूछा, इस पर दक्ष ने भगवान शिव के बारे में अपशब्द कहा, तब इस अपमान से पीड़ित होकर सती मौन होकर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठ गयी और भगवान शिव के चरणों में अपना ध्यान लगा कर योग मार्ग के द्वारा वायु तथा अगिन तत्व को धारण करके अपने शरीर को अपने ही तेज से भस्म कर दिया, जब शिवजी को इस दुर्घटना का पता चला तो क्रोध से उनका तीसरा नेत्र खुल गया और यज्ञ का नाश हो गया। तब भगवान शंकर ने माता सती के पार्थिव शरीर को कंधे पर उठा लिया और गुस्से में तांडव करने लगे। मैहर का मतलब है मां का हा ब्रह्मांड की भलाई के लिए भगवान विष्णु ने ही सती के अंग को बावन हिस्सों में विभाजित कर दिया। जहाँ-जहाँ सती के शव के विभिनन अंग और आभूषण गिरे, वहां-वहां शक्ति पीठों का निर्माण हुआ। उन्हीं में से एक शक्ति पीठ है मैहर देवी का मंदिर, जहां मां सती का हार गिरा था। मैहर का मतलब है, मां का हार, इसीलिये इस स्थल का नाम मैहर पड़ा। अगले जन्म में सती ने हिमाचल राजा के घर पार्वती के रूप में जन्म लिया और घोर तपस्या कर शिवजी को फिर से पति के रूप में प्राप्त किया। इस तीर्थस्थल के बारे में दूसरी रोचक दन्तकथा भी प्रचलित है। बताते हैं कि आज से 200 साल पहले मैहर में महाराज दुर्जन सिंह जुदेव नाम के राज शासन करते थे। उन्हीं कें राज्य का एक चरवाहा गाय चराने के लिए जंगल में आया करता था। इस भयावह जंगल में दिन में भी रात जैसा अंधेरा रहता था। कई तरह की डरावनी आवाजें आया करती थीं एक दिन उसने देखा कि उन्हीं गायों के साथ एक सुनहरी गाय कहीं से आ गई और शाम होते ही वह गाय अचानक कहीं चली गई। दूसरे दिन जब वह चरवाहा इस पहाड़ी पर गायें लेकर आया, तो देखा कि फिर वही गाय इन गायों के साथ मिलकर चर रही है। तब उसने निश्चय किया कि शाम को जब यह गाय वापस जाएगी तब उसके पीछे-पीछे वह भी जाएगा। गाय का पीछा करते हुए उसने देखा कि वह पहाड़ी की चोटी में स्थित गुफा में चली गई और उसके अंदर जाते ही गुफा का द्वार बंद हो गया। वह वहीं द्वार पर बैठ गया। उसे पता नहीं कि कितनी देर कें बाद द्वार खुला। लेकिन उसे वहां एक बूढ़ी मां के दर्शन हुए। तब चरवाहे ने उस बूढ़ी महिला से कहा, 'माई मै आपकी गाय को चराता हूं, इसलिए मुझे पेट के वास्ते कुछ दे दों मै इसी इच्छा से आपके द्वार आया हूं।' बूढ़ी माता अंदर गई और लकड़ी के सूप में जौ के दाने उस चरवाहे को दिए और कहा, 'अब तू इस जंगल में अकेले न आया कर।' वह बोला, 'माता मेरा तो काम ही जंगल में गाय चराना है, लेकिन आप इस जंगल में अकेली रहती हैं आपको डर नहीं लगता।' तो बूढ़ी माता ने उस चरवाहे से हंसकर कहा- बेटा यह जंगल, ऊंचे पर्वत-पहाड़ ही मेरा घर है, में यही निवास करती हूं। इतना कह कर वह गायब हो गई। चरवाहे ने घर आकर जौ के दाने वाली गठरी खोली, तो हैरान हो गया। उसमें जौ की जगह हीरे-मोती चमक रहे थे। उसने सोचा- मैं इसका क्या करूंगा। सुबह होते ही राजा के दरबार में हाजिर होऊंगा और उन्हें आप बीती सुनाऊंगा। दूसरे दिन दरबार में वह चरवाहा अपनी फरियाद लेकर पहुंचा और राजा के सामने पूरी आपबीती सुनाई। उस चरवाहे की कहानी सुनकर राजा ने दूसरे दिन वहां जाने का कहकर, अपने महल में सोने चला गया। रात में राजा को ख्वाब में चरवाहे द्वारा बताई बूढ़ी माता के दर्शन हुए और आभास हुआ कि यह आदि शक्ति मां शारदा हैं। स्वपन में माता ने महाराजा को वहां मूर्ति स्थापित करने का आदेश दिया और कहा कि मेरे दर्शन मात्र से सभी लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण होगी। सुबह होते ही राजा ने माता के आदेशानुसार सारे कार्य करवा दिए। शीघ्र ही इस स्थान की महिमा चारों ओर फैलने लगी। माता के दर्शनों के लिए श्रद्धालु कोसों दूरे से आने लगे और उनकी मनोवांछित मनोकामना भी पूरी होने लग। इसके बाद माता के भक्तों ने मां शारदा का विशाल मंदिर बनवा दिया। इस धार्मिक स्थल के सन्दर्भ में एक अन्य दन्तकथा भी प्रचलित है। परंपरा के मुताबिक दो वीर भाई आल्हा और उदल जिन्होंने पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध लड़ा था, वो भी शारदा माता के भक्त हुआ करते थे।

संक्षिप्त समाचार

बदलता कश्मीर : अब नहीं यह आतंकी की घाटी, यहां फूल खिले हैं गुलशन-गुलशन

श्रीनगर। कश्मीर में इन दिनों हर तरफ बहार का खुमार छाया हुआ है। जिसे देखो वही इन खूबसूरत पलों को अपनी बाहों में समेटने को बेताब दिखता है। बागों में खिले फूलों की खुशबू बताने के लिए काफी है कि अब कश्मीर आतंक की घाटी नहीं बल्कि यहां हर तरफ अमन और शांति का गुलशल खिला हुआ है। होटल फुल हैं, टैक्सियों की बुकिंग चल रहा है। डल झील में पर्यटकों को किश्ती में सैर करवाने वाले शिकारावालों के पास पलभर आराम करने का भी समय नहीं है। बरसों बाद कश्मीर में यूं रौनक लौटती नजर आ रही है। बेखौफ घूमते लोगों से जब हालात की बात करो तो मुस्कुराते हुए कहते हैं-बहुत बहा खून, अब जनन्त में जनन्त का मजा लेने दो। स्थानीय लोगों से लेकर पर्यटकों में सुरक्षा और विश्वास की भावना साफ नजर आ रही है। मौजूदा वर्ष में पहली जनवरी से अब तक कश्मीर में करीब सवा तीन लाख पर्यटक आ चुके हैं। बीते तीन दिनों में ही करीब 10 हजार सैलानी कश्मीर में मौसम-ए-बहार का मजा लेने पहुंचे हैं। पर्यटन उद्योग से जुड़े लोग इससे खासे उत्साहित हैं। उन्हें उम्मीद है कि अगर यही सिलसिला जारी रहा तो इस साल 2011 में आए 13 लाख पर्यटकों की आमद का रिकार्ड टूट जाएगा। उम्मीद है कि इस बार 15 लाख के करीब पर्यटक आएंगे। जनवरी में 61,400, फरवरी में 1.05 लाख और मौजूदा मार्च में अब तक 1.65 लाख पर्यटक आ चुके हैं।

दिल्ली में अचानक बढ़ी कोरोना की संक्रमण दर, डीडीएमए की बैठक में चौथी लहर पर भी हो सकती है चर्चा

नई दिल्ली, जागरण डिजिटल डेस्क। राजधानी दिल्ली में बुधवार को 24 घंटे के दौरान कोरोना वायरस संक्रमण के 100 से अधिक मामले सामने आए हैं। यह चिंता बढ़ाने वाली बात इसलिए भी है, क्योंकि कई दिनों से 100 से कम मामले आ रहे थे। इसके साथ ही संक्रमण दर 0.05 प्रतिशत भी इजाफा हुआ है। चीन, दक्षिण पूर्व एशिया और यूरोप के कुछ देशों में कोरोना वायरस संक्रमण की ताजा लहर को देखते हुए देश में भी चिंता बढ़ने लगी है। इस बाबत केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय भी सतर्क हो गया है।

उत्तर प्रदेश रोलर स्केट बास्केटबॉल एसोसिएशन के महासचिव बने आकाश रावल

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। ग्रेनो रोलर स्केटिंग स्पोर्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष व स्केटिंग कोच आकाश रावल ने बताया कि बीते 26 से 27 मार्च को हरियाणा के सोनीपत गोहाना में रोलर स्केट बास्केटबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया

की एनुअल जनरल बॉडी मीटिंग 2022 का आयोजन हुआ था यह मीटिंग रोलर स्केट बास्केटबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया के प्रेसिडेंट और ओलंपिक मेडलिस्ट रेसलर योगेश्वर दत्त, मुख्य संरक्षक और आई.पी.एस डी.आई.जी श्री ओ.पी नरवाल और महासचिव उमेश सैनी के द्वारा की गई इस मीटिंग में गुजरात, तमिलनाडु, हैदराबाद, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, आदि राज्यों से स्केटिंग कोच आए थे जिसम ग्रेटर नॉएडा के स्केटिंग कोच आकाश रावल ने उत्तर प्रदेश की तरफ इस मीटिंग में हिस्सा लिया था इस मीटिंग में फेडरेशन के पदाधिकारियों ने आकाश रावल को उत्तर प्रदेश रोलर स्केट बास्केटबॉल एसोसिएशन का महासचिव बनाने का निर्णय लिया गया फेडरेशन के प्रेसिडेंट और ओलंपिक रेसलर योगेश्वर दत्त, ने 28 मार्च को सोनीपत के गोहाना में अपनी रेसलिंग की योगेश्वर दत्त कुश्ती एकेडमी में आकाश रावल को बुलाकर महासचिव उमेश सैनी के साथ मिलकर आकाश रावल को उत्तर प्रदेश रोलर स्केट बास्केटबॉल एसोसिएशन का एफ्लिएशन सर्टिफिकेट और प्रमाण पत्र देकर उत्तर प्रदेश रोलर स्केट बास्केटबॉल एसोसिएशन का महासचिव घोषित किया गया इस मौके पर मनीष भाटी, चरण सिंह और नीतू सिंह मौजूद रहें आकाश रावल ने फेडरेशन के सभी पदाधिकारियों का दिल से धन्यवाद किया और बताया की इस बड़ी कामयाबी से माता पिता और परिवार में खुशी की लहर है।आकाश रावल ग्रेटर नोएडा के एस्टर पब्लिक स्कूल में पिछले 4 सालो से स्पोर्ट्स टीचर है और ग्रेटर नोएडा के गांव जैतपुर के रहने वाले है आकाश खेल के साथ साथ कॉलेज में पढ़ाई भी कर रहे है आकाश को साल 2019 दिल्ली के प्रगति मैदान में स्पोर्ट इंडिया अवॉर्ड्स 2019 में बेस्ट स्केटिंग कोच का अवार्ड देकर सम्मानित किया था ।

किसानों ने किया कंपनी पर प्रदर्शन, 13 किसान गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। किसान मजदूर सभा के नेतृत्व में सैकड़ों किसानों ने स्थानीय युवाओं को रोजगार देने की मांग को लेकर बुधवार को हायर कंपनी पर हल्ला बोल प्रदर्शन किया। किसानों ने कंपनी के अंदर घुसने की कोशिश की। इस बीच किसानों और पुलिस के बीच नोकझोंक भी हुई। पुलिस ने 13 किसानों को गिरफ्तार किय है। किसानों ने चेतावनी दी है कि वे गुरुवार को फिर से कंपनी के गेट पर प्रदर्शन करेंगे। किसान बेरोजगार सभा के प्रदेश अध्यक्ष व प्रवक्ता विजयपाल भाटी ने बताया अपने तय कार्यक्रम के अनुसार गुरुवार को सैकड़ों की संख्या में किसान और महिलाएं कंपनी के गेट पर पहुंचे थे। इस दौरान किसानों ने कंपनी के गेट पर जोरदार प्रदर्शन किया। इस बीच कंपनी प्रबंधन के साथ उनकी वार्ता हुई लेकिन बेनतीजा रही। जिससे आक्रोशित किसानों ने कंपनी के गेट पर जमकर हंगामा किया। पुलिस से नोकझोंक हुई। किसानों ने बताया कि कंपनी प्रबंधन वादाखिलाफी कर रहा है। स्थानीय युवाओं को नौकरी नहीं दी जा रही है। कंपनी में बाहरी लोगों को रखा जा रहा है। किसानों ने चेतावनी दी है कि जब तक स्थानीय युवाओं को रोजगार नहीं मिल जाता संघर्ष जारी रहेगा। किसानों ने गुरुवार को फिर से कंपनी के गेट पर धरना प्रदर्शन की चेतावनी दी है। इस मौके पर राजेंद्र प्रधान, सूबेदार नेताजी, अजय प्रधान, ओमवीर प्रधान, हेमचंद्र प्रधान, सुखबीर सिंह, विजय बीडीसी, पवन आदि उपस्थित रहे। पुलिस ने 13 किसानों को गिरफ्तार कर जेल भेजा कंपनी पर धरना प्रदर्शन करने पहुंचे 13 किसानों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। सभी को गिरफ्तार कर पुलिस लाइन ले जाया गया। जहां से सभी को जेल भेज दिया गया।

किसानों ने किया कंपनी पर प्रदर्शन, 13 किसान गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। किसान मजदूर सभा के नेतृत्व में सैकड़ों किसानों ने स्थानीय युवाओं को रोजगार देने की मांग को लेकर बुधवार को हायर कंपनी पर हल्ला बोल प्रदर्शन किया। किसानों ने कंपनी के अंदर घुसने की कोशिश की। इस बीच किसानों और पुलिस के बीच नोकझोंक भी हुई। पुलिस ने 13 किसानों को गिरफ्तार किय है। किसानों ने चेतावनी दी है कि वे गुरुवार को फिर से कंपनी के गेट पर प्रदर्शन करेंगे। किसान बेरोजगार सभा के प्रदेश अध्यक्ष व प्रवक्ता विजयपाल भाटी ने बताया अपने तय कार्यक्रम के अनुसार गुरुवार को सैकड़ों की संख्या में किसान और महिलाएं कंपनी के गेट पर पहुंचे थे। इस दौरान किसानों ने कंपनी के गेट पर जोरदार प्रदर्शन किया। इस बीच कंपनी प्रबंधन के साथ उनकी वार्ता हुई लेकिन बेनतीजा रही। जिससे आक्रोशित किसानों ने कंपनी के गेट पर जमकर हंगामा किया। पुलिस से नोकझोंक हुई। किसानों ने बताया कि कंपनी प्रबंधन वादाखिलाफी कर रहा है। स्थानीय युवाओं को नौकरी नहीं दी जा रही है। कंपनी में बाहरी लोगों को रखा जा रहा है। किसानों ने चेतावनी दी है कि जब तक स्थानीय युवाओं को रोजगार नहीं मिल जाता संघर्ष जारी रहेगा। किसानों ने गुरुवार को फिर से कंपनी के गेट पर धरना प्रदर्शन की चेतावनी दी है। इस मौके पर राजेंद्र प्रधान, सूबेदार नेताजी, अजय प्रधान, ओमवीर प्रधान, हेमचंद्र प्रधान, सुखबीर सिंह, विजय बीडीसी, पवन आदि उपस्थित रहे। पुलिस ने 13 किसानों को गिरफ्तार कर जेल भेजा कंपनी पर धरना प्रदर्शन करने पहुंचे 13 किसानों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। सभी को गिरफ्तार कर पुलिस लाइन ले जाया गया। जहां से सभी को जेल भेज दिया गया।

गांवों की समस्याओं के खिलाफ ग्रेनो प्राधिकरण के दफ्तर पर करप्शन फ्री इंडिया का हल्ला बोल

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के अंतर्गत आने वाले स्मार्ट गांव सूरजपुर गिरधरपुर इमलिया घंघौला,तालड़ा झालड़ा, दलेलगढ़ जुनेदपुर आदि गांव की मूलभूत समस्याओं के खिलाफ करप्शन फ्री

इंडिया संगठन के संस्थापक सदस्य आलोक नागर के नेतृत्व में प्राधिकरण के दफ्तर पर हल्ला बोल प्रदर्शन कर 1 घंटे तक अधिकारियों को दफ्तर के मेन गेट पर बंधक बनाकर रखा करप्शन फ्री इंडिया संगठन के संस्थापक चौधरी प्रवीण भारतीय और आलोक नागर ने बताया कि प्राधिकरण के अंतर्गत आने वाले गांवों के मुख्य रास्तों में जलभराव की समस्या, श्मशान घाट नहीं होना,स्ट्रीट लाइट पिछले लंबे समय से बंद है,गांव में सफाई व्यवस्था बिल्कुल चरमराई हुई है,सफाई कर्मी गांव में नियमित रूप से सफाई नहीं करते है,गंदगी की वजह से गांव में संक्रामक रोग का खतरा बना हुआ है। चौधरी प्रवीण भारतीय ने बताया कि इन सभी समस्याओं के खिलाफ ग्रामीणों में काफी रोष है आज संगठन एवं ग्रामीणों ने मिलकर प्राधिकरण दफ्तर पर हल्ला बोल प्रदर्शन किया। उन्होंने बताया कि ज्ञापन लेने आए उप महाप्रबंधक सलील यादव को प्राधिकरण के मुख्य द्वार पर 1 घंटे तक धूप में बैठा कर समस्याओं के समाधान पर चर्चा की। चौधरी प्रवीण भारतीय ने कहा कि अगर 1 सप्ताह में समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो बड़े स्तर पर प्राधिकरण के खिलाफ आंदोलन चलाया जाएगा। इस दौरान- आलोक नागर बलराज हूण जिलाध्यक्ष प्रेम प्रधान राकेश नागर एडवोकेट अनिल भाटी यतेंद्र नागर रविंद्र गौतम डॉक्टर अख्तर हुसैन अजय नागर सूबेदार जगदीश सतवीर कपिल प्रेमी नफीस अहमद यशपाल गौतम हवलदार रोशन सिंह नीरज गौतम हवलदार बालेश्वर सिंह राजकुमार विकास गौतम राकेश आदि लोग मौजूद रहे।

कलेक्टर का आदेश नहीं मानते भूसा माफिया

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिनेश कुमार यादव

मैहर। कुछ दिनों पहले सतना जिले के कलेक्टर अनुराग वर्मा ने पत्र जारी करते हुए कहा था कि जिले में भूसे

की मात्रा कम है और गौशाला ज्यादा होने की वजह से उसे पर्याप्त मात्रा में भूसा नही मिल रहा है, इसी के तहत उन्होंने पत्र जारी कर के भूसा के काम पर अंकुश लगाया था और कहा था कि जिले से बाहर भूसा कहीं भी नहीं बेचा जाएगा लेकिन भूसा माफिया इन सब चीजों को नहीं मानते है इस तरीके से सतना जिले के अंदर से गेहूं का भूसा लगातार बाहर जा रहा है और जिसकी जानकारी शासन को है, देखकर तो यही लगता है कि इस कार्य में व्यापारियों के साथ शासन के लोग मिले हुए है नहीं तो यह काम क्यों चलता यह छायाचित्र मैहर की है जहां पर सतना से इंदौर भूसा जा रहा था ऐसे ही भूसा की गाड़ी रात को कई ट्रक इसी शहर से निकलती है

पीएम के नाम एसडीएम को सौंपा ज्ञापन दो दिवसीय हड़ताल पर आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

ब्यौहारी। मजदूर एवं जन विरोधी नीतियों को वापस लेने, आंगनवाडी परियोजनाओं सार्वजनिक उद्योगों का निजीकरण रोकने, आंगनवाडी कमिर्यों को नियमित करने, तब

तक न्यूनतम वेतन एवं समाजिक सुरक्षा योजनाओं को लाभ देने की मांग को लेकर आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिकता दो दिवसीय हड़तल पर रही। इस दौरान सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता व सहायिक नगर के बस स्टैंड स्थित देवी मंदिर पर एकत्रित होकर अपना विरोध प्रदर्शन किया। उन्होने बताया कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिकाएं शासन का केंद्र रूप में काम कर रही है। शासकीय योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का काम कर रही आंगनबाड़ी कार्यकर्ता व ऑमनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका एकता यूनियन (सीटू) सहायिकाओं को सरकार कर्मचारी के रूप में नियमित करने के साथ ही वेतन एवं सुविधाओं से वंचित रख रही है। शासन के प्रतिनिधि के रूप में 35-40 वर्ष की सेवा करने के बाद भी आंगनबाडी कार्यकर्ता एवं सहायिकाओं को कर्मचारी का दर्जा, न्यूनतम वेतन एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के लाभ से वंचित रखा जा रहा है। इतनी लम्बी अवधि की सेवा के बाद सेवा निवृत्ति पर उन्हे पेंशन, ग्रेच्युटी आदि कोई भी लाभ नहीं दिया जाता है। इस परिस्थिति में सरकार की मजदूर विरोधी, जनविरोधी नीतियों के खिलाफ सार्वजनिक उद्योगों, आंगनवाडी परियोजनाओं सहित सरकारी संस्थाओं के निजीकरण के विरोध में केन्द्रीय श्रमिक संगठनों एवं आंगनवाड़ी वर्कर्स एण्ड हेल्पर्स फेडरेशन के राष्ट्रीय आह्वान पर 28 एवं 29 मार्च 2022 को दो दिवसीय राष्ट्रव्यापी हडताल में शामिल होते हुये आंगनवाडी कार्यकर्ता एवं सहायिका यूनियन मध्य प्रदेश ने मांगे पूरी करने ज्ञापन सौंपा है।

ग्रेनो के एक्सपो मार्ट में हस्तशिल्प मेले का आगाज

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। इंडिया एक्सपो मार्ट में देश के सबसे बड़े हस्तशिल्प मेले का आगाज हुआ। हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद द्वारा आयोजित हस्तशिल्प एवं उपहार मेले का उद्घाटन केंद्रीय कपड़ा राज्यमंत्री दर्शना विक्रम जरदोश ने किया। इस पांच दिवसीय मेले में 90 से अधिक देशों के लगभग 4500 विदेशी खरीदार पहुंचेंगे। केंद्रीय कपड़ा राज्य मंत्री दर्शना विक्रम जरदोश ने कारोबारियों को सरकार की ओर से हरसंभव मदद का आश्वासन दिया। इस दौरान उन्होंने पवेलियन में मौजूद प्रदर्शकों से बातचीत की। मेले में 2500 प्रदर्शकों ने अपने स्टॉल और पवेलियन के माध्यम से हस्तशिल्प उत्पाद लगाए हैं। प्रदर्शकों को उम्मीद है कि इस प्रदर्शनी से बहुत अच्छा निर्यात होगा। प्रदर्शनी में 14 श्रेणियों में हाउसवेयर, होम फर्निशिंग, फर्नीचर, उपहार, सजावटी सामान, लैंप एंड लाइटिंग, क्रिसमस और फेस्टिव डेकोर, फैशन ज्वैलरी, एक्सेसरीज, स्पा और वेलनेस, बाथरूम एसेसरीज, गार्डन एसेसरीज, एजुकेशनल टॉयज एंड गेम्स, हैंडमेड पेपर प्रोडक्ट्स, स्टेशनरी एवं लेदरबैग आदि प्रदर्शित किए गए हैं। कपड़ा सचिव मेले में पहुंचे केंद्रीय कपड़ा सचिव यूपी सिंह ने पहले दिन हस्तशिल्प प्रर्दशनी का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने स्टॉल पर जाकर प्रदर्शकों से बातचीत की। पहली बार स्टॉल लगा रहे स्टार्टअप करने वाले युवाओं और लद्दाख के स्टाल लगाने वाले शिल्पियों से मिलकर उनकी समस्याएं भी सुनीं। उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। एक्सपो बाजार ई-कॉमर्स प्लेटफार्म की शुरुआत ईपीसीएच ने एक्सपो बाजार ई-कॉमर्स प्लेटफार्म की शुरुआत की है। एक्सपो बाजार एक ई-कॉमर्स और तकनीकी आपूर्ति श्रृंखला मंच है जो भारत की विरासत कला और कारीगरों को विश्व बाजारों से जोड़ता है। ईपीसीएच के महानिदेशक डॉ. राकेश कुमार ने बताया कि भारतीय विक्रेताओं के लिए एक्सपो बाजार लॉन्च किया गया है ताकि विक्रेता अपने उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय और घरेलू बाजारों में प्रदर्शित कर सकें। यह एकमात्र तरीका है जिससे दुनिया दूरदराज के ग्रामीण इलाकों और कस्बों में रहने वाले भारतीय शिल्प और परंपराओं से जुड़ सकती है और हमारी 5000 साल की विरासत की सराहना करने में सक्षम हो सकती है।

आप ने सीएम अरविंद केजरीवाल के घर पर हमले के खिलाफ कार्यकर्ताओ का विरोध-प्रदर्शन

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर पर हमले के विरोध में आम आदमी पार्टी ने प्रदेशव्यापी विरोध- प्रदर्शन किया। इस दौरान नोएडा में पार्टी के जिलाध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह जादौन की अध्यक्षता में आयोजित विरोध-प्रदर्शन में प्रदेश अध्यक्ष सभाजीत

सिंह भी शामिल हुए। आप कार्यकर्ताओं ने यहां हमला करने वालों की गिरफ्तारी घटना की सुपर कोटगेट न्यायाधीश की निगरानी में जांच एवं दोषियों पर कानूनी कार्रवाई की मांग की। प्रदेश अध्यक्ष सभाजीत सिंह ने सीएम अरविंद केजरीवाल के घर किये गये हमले की निंदा की। उन्होंने इस घटना को शर्मनाक बताया और कहा कि पंजाब में मिली करारी हार के बाद बीजेपी दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की हत्या कराना चाहती है। वो अरविंद केजरीवाल को मारना चाहती है। उन्होंने कहा कि जिस तरह से कल पुलिस की मौजूदगी में पुलिस के साथ भारतीय जनता पार्टी के गुंडे मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के दिल्ली स्थित आवास पर पहुंचे और उन्होंने घर के सीसीटीवी तोड़े और सिक्योरिटी के बूम बैरियर तोड़े। इससे साफ है कि वो उनको नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से वहां गये थे। भूपेन्द्र सिंह जादौन ने मांग की है कि यह काम भारतीय जनता पार्टी के गुंडो ने किया है। दिल्ली के यशस्वी मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर पर हमला सोची समझी साजिश के तहत किया गया है। इसलिए दोषियों पर कठोर कार्रवाई की जानी चाहिये। कार्यक्रम में विनय पटेल मीनाक्षी श्रीवास्तव ओमवीर यादव पंकज अवाना संजय चेची प्रो ऐ के सिंह पूनम सिंह नितिन प्रजापति राकेश अवाना राहुल सेठ तरुन तंवर,डॉ बी पी सिंह,कुलदीप कुमार,मुनन गुप्ता,अनिल चेची,परशुराम चौधरी, उमेश गौतम,मुकेश प्रधान,अखंड प्रताप सिंह गुड्डू यादव,जय किशन जैसवाल,प्रीति उपाध्यक्ष, अनीता चौधरी, रिहाना खातून,नितिन प्रधान,कैलाश शर्मा,ऋषि बैसोया, सतीश कुमार,एडवोकेट प्रशान्त राज,दिलीप मिश्रा, अमित भारद्वाज, श्रीकांत वैद्य,मुकुल अवाना, भूपेन्द्र, आकाश,कमल मावी,राजेश उपाध्याय, प्रदीप सुनाइच्या,वीरेन चौधरी,गजेन्द्र चौधरी, अफजल चौधरी, राजीव कुमार इम्तियाज अली, उदय कुमार,नितिन प्रधान,सुमित चपराना,मनदीप अवाना, सुमित,सतवीर,राहुल, नवीन भाटी,रहीस ठाकुर,अफलातून,श्यामू रवि चौधरी,संदीप भाटी ,नियामत, बब्लू, रिजवान,सरिता,अंजू,मुश्कान, पुष्पा,उदय कुमार,प्रमोद सिंह,सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता शामिल रहे।

औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी से मुलाकात कर ग्रेनो के उम्मीदों से कराया अवगत

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। भाजयुमो प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य ऋषभ शर्मा

ने 30 मार्च को लखनऊ स्थित औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी के आवास पर मुलाकात करके उन्हें शुभकामनाएं दिया। इस अवसर पर भाजयुमो नेता ने ग्रेटर नोएडा के लोगों के उम्मीदों से अवगत कराया। भाजयुमो नेता ऋषभ शर्मा ने बताया कि गौतमबुद्धनगर जिला(नोएडा, ग्रेटर नोएडा) उत्तर प्रदेश का शो विंडो है ,हम सभी लोग जानते है कि नोएडा, ग्रेटर नोएडा उत्तर प्रदेश की आर्थिक राजधानी है। औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी जी से हम सभी को बहुत उम्मीद है ,मुझे पूरा विश्वास है मंत्री जी के नेतृत्व में हमारे यहां चौहुमुखी विकास होगा। जिले में स्थित नोएडा अथॉरिटी ,यमुना अथॉरिटी, ग्रेटर नोएडा अथॉरिटी और बेहतर सामंजस्य स्थापित करके जनकल्याण के लिए कार्य करेगा।

सेक्टर 82 (पाकेट 7) मे श्री राम कथा के आयोजन की तैयारियाँ जोरो पर

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सेक्टर 82 के पॉकेट 7 के सेंट्रल पार्क में 8 अप्रैल से

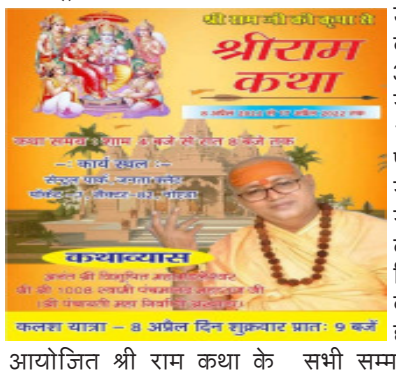

आयोजित श्री राम कथा के आयोजन की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। श्री राम कथा आयोजन समिति के सदस्य रवि राघव ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि कथा व्यास अनंत श्री विभूषित महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी पंचमानंद जी महाराज (श्री पंचायती महानिर्वाणी अखाड़ा) के मुखारविंद से नव दिवसीय श्रीराम कथा की अमृत रूपी वर्षा होगी जिसमें आप सभी सम्मानित भक्त गण भी सपरिवार सादर आमंत्रित है । श्री राम कथा की महिला मंडल टीम घर घर जाकर श्री राम कथा और कलश यात्रा के लिए जनसंपर्क कर रहे हैं । कल महिला मंडल सदस्यों ने पॉकेट 7 पॉकेट 12 व श्रमिक कुंज में घर-घर जाकर कलश यात्रा के लिए निमंत्रण दिए यह कथा 8 अप्रैल को कलश यात्रा के साथ प्रारंभ होगी और 17 अप्रैल को हवन आरती और विशाल भंडारे के साथ पूर्णाहुति होगी । श्री राम कथा में मथुरा से आ रहे कलाकार नित्य सुंदर सुंदर झांकी भी प्रस्तुत करेंगे।

ऋषि कपूर के हिट गाने 'ओम शांति ओम' पर थिरके रणबीर कपूर, आमिर खान करीना कपूर, आलिया भट्ट

नई दिल्ली। हिंदी सिनेमा के वेटरन एक्टर ऋषि कपूर की आखिरी फिल्म शर्माजी नमकीन प्राइम वीडियो पर रिलीज हो गयी है। 2020 में निधन हो जाने की वजह से ऋषि के कई हिस्सों को परेश रावल ने पूरा किया है। रणबीर कपूर ने अपने पिता की आखिरी फिल्म के प्रमोशन का बीड़ा उठाया है। इसी क्रम में प्राइम ने वेटरन एक्टर को श्रद्धांजलि देते हुए एक सॉन्ग वीडियो रिलीज किया है, जिसमें रणबीर कपूर, आलिया भट्ट, करीना कपूर और आमिर खान समेत इंडस्ट्री के कई यंग एक्टर्स उनके हिट गाने ओम शांति ओम की धुन पर थिरक रहे हैं। ऋषि कपूर का निधन 30 अप्रैल 2020 को उस वक्त हुआ था, जब कोरोना महामारी शीर्ष पर थी और देश लॉकडाउन से गुजर रहा था। ऋषि को इस फिल्म की शूटिंग के दौरान ही कैंसर का पता चला था, जिसके बाद वो इलाज के लिए न्यूयॉर्क चले गये। इस दौरान ऋषि सोशल मीडिया में भी एक्टिव रहे थे और ट्वीट करके फैंस के साथ इंटरेक्ट करते रहते थे। हालांकि, ठीक होने के कुछ महीनों बाद ही वो चल बसे। शर्माजी नमकीन का निर्माण मैकगफिन पिक्चर्स के साथ एक्सेल एंटरटेनमेंट ने किया है। फिल्म में ऋषि कपूर और परेश रावल के अलावा जूही चावला, सुहैल नयार, तारुक रैना, सतीश कौशिक, शीबा चड्ढा और ईशा तलवार जैसे कलाकार अहम भूमिकाओं में हैं। फिल्म का पूरा रिव्यू पढ़ने के लिए नीचे दिये गये लिंक पर क्लिक करें-

बिजली का करंट लगने से मरते-मरते बची थीं उर्फी जावेद, एक्ट्रेस ने दर्दनाक हादसे का हाथ पर दिखाया निशान

नई दिल्ली। टीवी अभिनेत्री और बिग बॉस ओटीटी की कंटेस्टेंट उर्फी जावेद आए दिन अपनी बोल्डसेन की वजह से सोशल मीडिया पर छाई रहती है। इसके अलावा वह अपनी निजी जिंदगी के कारण भी बहुत बार सुर्खियों

में आ चुकी है। उर्फी जावेद अक्सर अपनी जिंदगी को लेकर खास खुलासे करती रहती हैं। अब उन्होंने अपने साथ हुए एक दर्दनाक हादसे के बारे में बताया है। उर्फी जावेद ने खुलासा किया है कि एक बार वह बिजली के करंट की चपेट में आ गई थीं। इस दौरान उनकी मां ने मौके पर पहुंचकर उनकी जान बचा ली थी। हालांकि करंट की वजह से उर्फी जावेद के हाथ पर आज तक निशान है। इस बात का खुलासा अभिनेत्री ने सोशल मीडिया के जरिए किया है। उर्फी जावेद सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय रहती है। वह अपने फैंस से जुड़े रहने के लिए तस्वीरें और वीडियो शेयर करती रहती है। उर्फी जावेद ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट की स्टोरी पर एक तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर में उर्फी जावेद अपनी हथेली दिखाती दिख रही है। तस्वीर में उनकी हथेली पर एक जख्म का निशान भी नजर आ रहा है। इस तस्वीर को शेयर करते हुए उर्फी जावेद ने अपने साथ हुई दर्दनाक घटना के बारे में बताया है। उन्होंने खास कैप्शन लिख इस घटना के बारे में जानकारी दी है। उर्फी जावेद ने कैप्शन में लिखा, 'मजेदार सच्चाई, मैंने गलती से एक बार बिजली का नंगा तार पकड़ लिया था। मैं तार पकड़ते ही बेहोश हो गई थी। करंट का असर इतना ज्यादा था कि मेरे हाथ में छोटा छेद हो गया था। मेरी मां समय पर वहां आ गई और उन्होंने मुझे बचा लिया था मैं मर गई होती, लेकिन मैं मरी नहीं।' सोशल मीडिया पर उर्फी जावेद का यह पोस्ट तेजी से वायरल हो रहा है। अभिनेत्री के फैंस उनकी पोस्ट पर कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। आपको बता दें कि उर्फी जावेद सोशल मीडिया पर अक्सर अपनी हॉट और बोल्ड तस्वीरें शेयर करती रहती है। वह अपने बोल्डनेस और ड्रेस की वजह से बहुत बार ट्रोलर्स के निशाने पर भी आ चुकी हैं। हालांकि उर्फी जावेद ट्रोलर्स को अक्सर मुंहतोड़ जवाब भी देती रहती हैं। उनकी तस्वीरें खूब वायरल होती रहती हैं।

विल स्मिथ की पत्नी जेडा वाली बीमारी से जूझ चुकी हैं बॉलीवुड की ये एक्ट्रेस थप्पड़ विवाद के बाद किया खुलासा

नई दिल्ली। ऑस्कर 2022 में विल स्मिथ और क्रिस रॉक के बीच हुआ थप्पड़ विवाद इन दिनों काफी सुर्खियों में है। हर तरफ हॉलीवुड एक्टर विल स्मिथ कॉमेडियन क्रिस रॉक को स्टेज पर थप्पड़ मारने को

लेकर सुर्खियों में बनें हुए हैं। विल ने ऑस्कर अवार्ड्स सेरेमनी में ऑन कैमरा क्रिस रॉक को जोरदार थप्पड़ जड़ मरा था। वहीं विल स्मिथ ने बाद में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के जरिए अपने इस बर्ताव के लिए माफी मांगी है। ये सारा विवाद इस लिए हुआ था क्योंकि क्रिस ने विल स्मिथ की पतनी जेडा पिंकेट स्मिथ के गंजेपन का मजाक बनाया था। इसी बात से नाराज होकर विल स्मिथ ने क्रिस को थप्पड़ मारा था। जेड नाम की बीमारी से जूझ रही थी। लेकिन क्या आप जानते हैं कि बॉलीवुड की एक एक्ट्रेस भी जेडा वाली बीमारी का सामना कर चुकी हैं। आइए जानते हैं कौन है वो विल स्मिथ की पत्नी जेडा पिंकेट स्मिथ जिस नाम की बीमारी से जूझ रही है उसी बीमारी का सामना बॉलीवुड एक्ट्रेस समीरा रेड्डी भी कर चुकी हैं। समीरा ने अपनी इस बीमारी का खुसाला सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के जरिए किया है। समीरा ने इंस्टाग्राम पर एक लंबा चौड़ा पोस्ट लिखा है। अपने इस इस पोस्ट में समीरा ने की बीमारी को ट्रॉमैट्स बताया है। समीरा ने बताया कि उनके पति अक्षय वर्डे ने साल 2016 में उनके सिर पर दो इंच का बाल्ड स्पॉट देखा था। इसके बाद ही उन्होंने अपनी इस बीमारी का इलाज कराया और अब वह ठीक हैं। लेकिन की दिक्कत कभी भी उनकी जिंदगी में वापस आ सकती है। समीरा रेड्डी ने अपनी पोस्ट में लिखा, 'ऑस्कर के विवाद ने मुझे बताया कि हम सबकी अपनी जिंदगी में कुछ लड़ाइयां हैं, जिन्हें हम लड़ रहे हैं की दिक्कत से लड़ना काफी मुश्किल है। यह आपको बीमार महसूस नहीं कराती और ना ही संक्रामक है। लेकिन इसके बावजूद आपके लिए इमोशनली इससे जूझना काफी मुश्किल है। यही नहीं समीरा रेड्डी ने अपनी इस पोस्ट के जरिए के अलग-अलग टाइप्स के बारे में भी फैंस को जानकरी दी है। समीरा ने बताया, 'सिर की जड़ में के इंजेक्शन लेने से उनके बाल वापस आए थे। लेकिन डॉक्टर ने उन्हें यह भी कहा था कि जिंदगी के किसी भी मोड़ पर यह बीमारी उन्हें वापस हो सकती है।

बॉक्स ऑफिस पर बेखौफ दहाड़ रही है राजामौली की 'आरआरआर' 6 दिन में कमाए इतने करोड़

नई दिल्ली। एसएस राजामौली की फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर तबाही मचा दी है। अपने ओपनिंग डे से ही ताबड़तोड़ कमाई कर रही

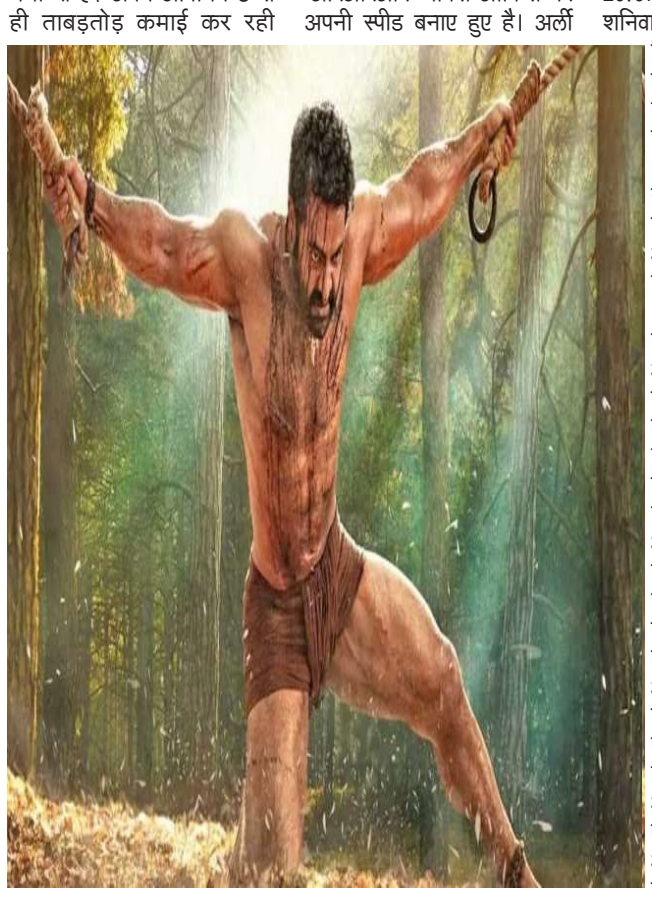

'आरआरआर' की रफ्तार जस की तस है। फिल्म ने छठे दिन भी जबरदस्त कलेक्शन किया है। सिर्फ हिन्दी बेल्ट में ही फिल्म ने 120 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है। मंगलवार को 100 करोड़ का आंकड़ा पार करने वाली 'आरआरआर' बॉक्स ऑफिस पर अपनी स्पीड बनाए हुए है। अर्ली ट्रेंड्स के मुताबिक फिल्म ने छठे दिन 13 से 15 करोड़ के बीच का बिजनेस किया है। साथ ही सिर्फ हिन्दी वर्जन ने अब तक कुल 120-122 करोड़ का कलेक्शन कर लिया है। डे वाइस कलेक्शन की बात करें तो, आरआरआर ने पहले दिन 20.07 करोड़ कमाए, जिसके बाद शनिवार को 24 करोड़, रविवार को फिल्म ने सारे रिकॉर्ड्स तोड़ते हुए 31.50 करोड़ का कलेक्शन दर्ज किया था। तो सोमवार को इसकी कमाई थोड़ी नीचे आई और फिल्म ने 17 करोड़ का बिजनेस किया। मंगलवार को ये आंकड़ा 15.02 करोड़ रहा बता दें कि हिन्दी बेल्ट में (साउथ की) यह एसएस राजामौली की 100 करोड़ का आंकड़ा पार करने वाली तीसरी फिल्म है, जबकि यह राम चरण और जूनियर एनटीआर की पहली फिल्म है। सूर्यवंशी, 83 द फिल्म, पुष्पा, गंगूबाई काठियावाड़ी और द कश्मीर फाइल्स के बाद आरआरआर 100 को पार करने वाली 6 वीं फिल्म है। इन ट्रेंड्स को देखकर ये कहना गलत नहीं होगा कि आरआरआर के भी सिर्फ 1 हफ्ते में बाहुबली के कलेक्शन को भी पीछे छोड़ सकती है। राजामौली की इस मोस्ट अवेटेड फिल्म के रिव्यूज काफी पॉजिटिव हैं। प्रशंसकों और आलोचकों दोनों से ही फिल्म को अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। बॉक्स ऑफिस पर के आंकड़ों पर नजर डाले तो लगता है एसएस राजामौली एक बार फिर अपने लिए एक नया मानदंड स्थापित करने जा रहे हैं।

'फिल्म द कश्मीर फाइल्स' की 200 करोड़ की कमाई पर पहली बार सामने आया विवेक अग्निहोत्री का रिएक्शन

नई दिल्ली। ऊप कश्मीरी पंडितों के दर्द को अपनी फिल्म 'फिल्म द कश्मीर फाइल्स' के जरिए लोगों के सामने लाने वाले विवेक अग्निहोत्री इन दिनों जबरदस्त सुर्खियों में बनें हुए हैं। विवेक की

ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर भी इतिहास रच रही है। हर दिन इसके बढ़ते आंकड़ों ने हर किसी को हैरान किया। जैसी फिल्म की रिलीज के बाद भी 'फिल्म द कश्मीर फाइल्स' की यह फिल्म लगातार कमाई किए जा रही है। इस फिल्म ने 19 दिन में 234.03 करोड़ कमा डाले हैं। वहीं 200 करोड़ क्लब में अपनी फिल्म की एंट्री को लेकर विवेक अग्निहोत्री काफी गदगद नजर आ रहे हैं। इसी बीच पहली बार फिल्म की कमाई पर उनका रिएक्शन भी सामने आ चुका है। उनका एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। यहां देखें वीडियो विवेक अग्निहोत्री का वायरल हो रहा वीडियो फोटोग्राफर विरल भयानी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया है। बता दें कि बीते बुधवार को विवेक मुंबई के जूहू में एक सलून के बाहर स्पॉट किए गए। इस दौरान मीडिया फोटोग्राफर्स ने उन्हें अपने कैमरे में कैद करने का मौका हाथ से जाने नहीं दिया। इस दौरान हर कोई विवेक को उनकी फिल्म की सफलता के लिए बधाई देता नजर आर रहा है। वीडियो में आप देख सकते हैं कि एक शख्स विवेक से 'द कश्मीर फाइल्स' के 200 करोड़ी होने की बात कर रहा है। इस पर वह बोलते हैं, 'यार पैसे की बात नहीं है लोगों के दिल जुड़ गए यही काफी है। विवेक के इस वीडियो को सोशल मीडिया पर काफी पसंद किया जा रहा है। वहीं विवेक ने फिल्म की कमाई को लेकर जो जवाब दिया है सोशल मीडिया पर उसकी काफी सराहना की जा रही है। अबतक इस वीडियो को लाखों लाइक्स मिल चुके हैं। वहीं इस पर कमेंट कर फैंस उनकी तारीफ करते नजर आ रहे हैं।

क्या उमर रियाज से प्यार करती हैं रश्मि देसाई फैन ने पूछा सवाल तो मिला ये जवाब

नई दिल्ली। टेलीविजन की लोकप्रिय अभिनेत्री रश्मि देसाई और बिग बॉस के एक्स कंटेस्टेंट उमर रियाज की जोड़ी फैन्स को काफी पसंद आती है। इन दोनों को एक-साथ देखने के लिए फैन्स हमेशा उत्सुक रहते हैं। हाल ही में इन दोनों की जोड़ी कलर्स के शो खतरा-खतरा में नजर आई थी, जहां उमर रियाज और रश्मि देसाई को कॉमेडियन भारती सिंह ने एक-दूसरे के नाम को लेकर खूब टीज किया। लेकिन हाल ही में रश्मि देसाई ने सोशल मीडिया पर अपने और उमर के रिश्ते को लेकर बात की और उनका और बिग बॉस के एक्स कंटेस्टेंट उमर रियाज का रिश्ता क्या है इस पर भी अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की। हाल ही में नागिन 6 एक्ट्रेस ने अपने सोशल मीडिया पर फैन्स से बातचीत की, जहां उन्होंने फैन्स के कई सवालों के जवाब दिए। एक फैन ने रश्मि देसाई से उमर रियाज से प्यार को लेकर सवाल किया। फैन ने लिखा, 'क्या आप उमर से प्यार करती थीं जिसका जवाब देते हुए टेलीविजन की लोकप्रिय अभिनेत्री रश्मि देसाई ने कहा, 'नहीं हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त हैं, जोकि एक परिवार की तरह हैं और इससे ज्यादा कुछ नहीं है। हमें पता है कि आप लोगों को हम दोनों की बॉन्डिंग बहुत पसंद है और हम इस चीज की वाकई सराहना करते हैं। इसी के साथ रश्मि देसाई ने उमर के साथ बैकग्राउंड में एक बहुत ही क्यूट सी तस्वीर लगाई। उमर रियाज ने बिग बॉस 15 में हिस्सा लिया था। जिसमें रश्मि देसाई भी वाइल्ड कार्ड एंट्री बनकर आई थीं। रश्मि देसाई और उमर की बॉन्डिंग घर में काफी अच्छी थीं, दोनों जब तक घर में रहे एक-दूसरे का साथ दिया। रश्मि देसाई ने घर में ये भी कुबूल किया था कि वह उमर रियाज को पसंद

करती है। बिग बॉस के घर में दर्शकों को इन-दोनों की जोड़ी खूब पसंद आई थी, जिसके बाद फैन्स ने उन्हें सोशल मीडिया पर उमरश का नाम दिया था। बिग बॉस के घर के अन्दर भी दोनों ने इस बात को क्लियर कर दिया था कि दोनों सिर्फ अच्छे दोस्त हैं और बिग बॉस के घर से बाहर आने के बाद भी दोनों की दोस्ती बरकरार है। छोटे परदे की बड़ी एक्ट्रेस रश्मि देसाई की हाल ही में एकता कपूर के सुपरनैचुरल शो 'नागिन 6' में एंट्री हुई है। नागिन 6 में रश्मि देसाई की एंट्री से उनके फैन्स काफी खुश हैं। रश्मि की खास दोस्त तेजस्वी प्रकाश शो में जहां प्रथा उर्फ शेष नागिन का किरदार निभा रही है।

'अनुपमा' की रुपाली गांगुली ने बर्थडे से पहले तोड़ा फैंस का दिल,

नई दिल्ली। 'अनुपमा' डेली सोप की दुनिया में इस समय सबसे हिट शोज में से एक है। सीरियल में लीड रोल प्ले कर रही रुपाली गांगुली दर्शकों के बीच काफी पॉपुलर है। एक्ट्रेस जल्द ही अपना 45वां जन्मदिन मनाने वाली हैं, अपनी अनुपमा के इस स्पेशल डे को और स्पेशल बनाने के लिए फैंस काफी समय से तैयारियां कर रहे हैं। अति उत्साही प्रसंशकों ने तो रुपाली के घर अभी से गिफ्ट्स और फ्लावर्स भी भेजने शुरू कर दिए। इस बीच रूपाली गांगुली ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर करके फैंस का दिल चकनाचूर कर दिया है। 18 मिनट के इस वीडियो में रुपाली गांगुली ने फैंस से काफी सारी बातें शेयर कीं। उन्होंने इतने प्यार और सम्मान के लिए फैंस को तले दिल से शुक्रिया भी कहा। साथ ही उन्होंने लोगों से गुजारिश भी कर डाली है कि वह उन्हें गिफ्ट्स ना भेजें क्योंकि उनके लिए फैंस का प्यार ही सब कुछ है। इसी के साथ रुपाली गांगुली ने फैन्स से उन्हें गिफ्ट भेजने की बजाए कुछ और काम करने के लिए कहा है। यहां देखें वीडियो इस वीडियो को रूपाली गांगुली ने इंस्टाग्राम पर शेयर किया है। वीडियो में वह फैंस से कह रही हैं, 'मुझे पता है आप लोग बहुत प्यार करते हैं और मेरे बर्थडे के लिए ढेर सारे प्लान भी बना लिए। आपने मुझे गिफ्ट्स भी भेजने शुरू कर दिए हैं लेकिन मैं आपसे गुजारिश करूंगी कि ऐसा करें। मुझे गिफ्ट भेजने की बजाय आप कुछ और भी कर सकते है। आप सभी जानते हैं कि मुजे जानवरों से कितना लगाव है। मुझे गिफ्ट ना देकर आप उन पैसों का इस्तेमाल एनिमल शेल्टर में करिए। या फिर अपने आसपास के जानवरों को कम से कम दिन में एक बार तो खाना जरूर खिलाइए।

जब सब काम छोड़कर घर बैठ गए थे ऋषि कपूर, बेटे रणबीर बोले- 'मेरी मां, मैं और बहन पागल हो गए थे

नई दिल्ली। बॉलीवुड के दिवंगत अभिनेता ऋषि कपूर अपनी आखिरी फिल्म शर्माजी नमकीन को लेकर फिर से चर्चा में हैं। उन्हें यह दुनिया छोड़े दो साल हो चुके हैं। ऐसे में ऋषि कपूर के बेटे अभिनेता रणबीर उनकी इस आखिरी फिल्म का जोर-शोर से प्रमोशन कर रहे हैं। शर्माजी नमकीन के प्रमोशन के दौरान रणबीर कपूर पति ऋषि की जिंदगी से जुड़े ढेर सारे खुलासे भी कर रहे हैं। रणबीर कपूर ने अब पति का लेकर बड़ा खुलासा किया है। उन्होंने बताया है कि ऋषि कपूर की जिंदगी में एक समय ऐसा भी आया था जब काम से दूर घर पर बैठ गए थे। वह घर पर वीडियो गेम और अन्य बेवजह के काम करके समय काटने लगे थे। उनका ऐसा करना रणबीर की मां नीतू और बहन रिद्धिमा कपूर को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। अभिनेता ने कहा कि ऋषि कपूर की वजह से परिवार को काफी परेशान होना पड़ा था। रणबीर कपूर ने हाल ही में अंग्रेजी वेबसाइट

फिल्म कंपैनियन से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने पिता ऋषि कपूर को लेकर ढेर सारी बातें कीं। उन्होंने कहा, 'एक लीड से कैरेक्टर अभिनेता के रूप में तीन-चार साल का मुझे उनका ट्रैंजिशन याद है। मुझे याद है कि वह कंप्यूटर पर गेम खेलते थे। मेरी मां गुस्सा हो जाती थीं क्योंकि उन्होंने पिता को इतने लंबे समय तक घर में कभी नहीं देखा था। और वह मेरी मां उसे पागल कर देते थे। अभिनेता ने आगे कहा, 'मेरी मां उन्हें आरके स्टूडियो में जाकर बस वहीं बैठने के लिए कहती रहती थीं। फिर, मेरे पिता, थोड़े समय के लिए, एक इंटीरियर डिजाइनर बन गए। उन्होंने हमारे घर में अलग-अलग जगह को बदलना शुरू कर दिया। वह चीजों की खरीदारी करने लगा। उसने खुद को व्यस्त रखने की कोशिश में ही चीजें करना शुरू कर देते थे। लेकिन उन्होंने महसूस किया कि काम उनकी आत्मा में था और वह सच में काम करना चाहते थे।' रणबीर ने विस्तार से बताया कि उस समय न केवल उनकी मां नीतू, बल्कि उनकी बहन रिद्धिमा कपूर साहनी और वह खुद भी ऋषि से नाराज थे। अभिनेता ने कहा, 'मेरी मां, मैं और मेरी बहन, हमें भी पागल करते जा रहे थे क्योंकि वह अटेंशन डिमांडिंग थे। इसलिए, हम सभी उम्मीद और प्रार्थना कर रहे थे कि यह बहुत अच्छा है कि हमें यह उनके साथ समय बिताने का मौका मिल रहा है लेकिन एक संतुलित तरीका अच्छा होता। क्योंकि यह उनका बहुत ज्यादा हो रहा है।

छोड़ रहीं हैं सुमोना चक्रवर्ती इस वजह के चलते ले रही हैं ये बड़ा फैसला

नई दिल्ली। द कपिल शर्मा शो दर्शकों का मनोरंजन करने के साथ ही खबरों में भी छाया रहता है। पिछले दिनों विवेक अग्निहोत्री की फिल्म के प्रमोशन के लिए उन्हें कपिल के शो में ना बुलाए जाने का मामला अभी थमा भी नहीं था कि अब एक और बड़ी खबर सामने आ रही है। रिपोर्ट्स के मुताबिक शो में नजर आने वाला एक एक्टर जल्द ही गायब होने वाला है। ये किरदार कपिल के साथ पिछले 8 सालों से स्टैंडअप के जरिए लोगों को गुदगुदा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स की माने तो कपिल शर्मा के शो पर नजर आने वाली भूरी यानि सुमोना चक्रवर्ती जल्द शो से ब्रेक लेने वाली हैं। उन्होंने जी एंटरटेनमेंट के लाइफस्टाइल चैनल जी जेस्ट के लिए शोनार बंगाल नाम के ट्रैवल शो के लिए बतौर होस्ट ज्वाइन किया है। ये शो 10 एपिसोड की सीरीज होगी, जिसमें हम बंगाल

को एक अलग नजरिए से देखेंगे। ट्रिब्यून से बात करते हुए, सुमोना ने कहा कि उन्हें राज्य का पता लगाने और उन कहानियों को उजागर करने का मौका मिला, जो उनके बचपन का हिस्सा रही है। सुमोना का मानना है कि विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों के साथ बातचीत करने में सक्षम होना उनके लिए सीखने का अनुभव रहा है। सुमोना कहती हैं, 'इस शो का हिस्सा बनकर मैं बेहद सम्मानित महसूस कर रही हूं।' एक्ट्रेस ने यह भी शेयर किया कि जब जी जेस्ट की टीम उनके पास पहुंची, तो उन्होंने तुरंत सोचा कि यह कुछ ऐसा है जिसका वह हिस्सा बनना पसंद करेंगी। अभिनेत्री ने कहा, मुझे हमेशा यात्रा करना, नई जगहों और संस्कृतियों के बारे में जानना पसंद है और इसे करने का इससे बेहतर तरीका क्या हो सकता है कि एक ट्रैवल शो और वह भी अपने राज्य बंगाल में।' द कपिल शर्मा शो से सुमोना के बाहर निकलने को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। हालांकि, जैसा कि शो के लिए उसे बंगाल राज्य के अंदरूनी इलाकों की यात्रा करने की आवश्यकता है, ऐसा लगता है कि सुमोना को कपिल के शो से बाहर निकना पड़ सकता है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।